شَهْرُ رَمَضَانَ

रमज़ान का महीना और करने के काम

डाक्टर फरहत हाशमी

eBook

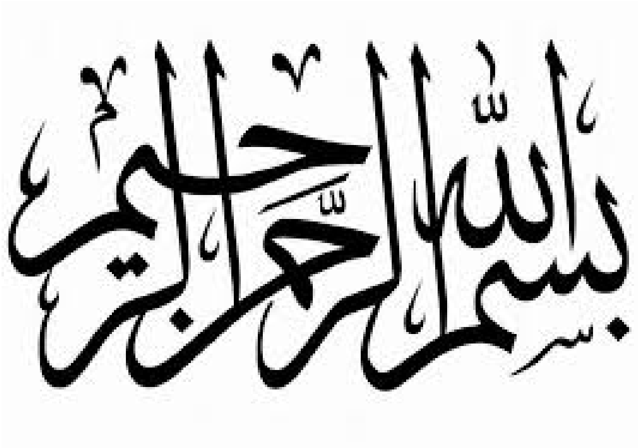

अल्लाह

के नाम से

जो बहुत मेहरबान

निहायत रहम करने वाला है

شَهْرُ رَمَضَانَ

रमज़ान का महीना और करने के काम
क़ुरआन और सुन्नत की रौशनी में

डाक्टर फरहत हाशमी

شَهرُ رَمَضَان

तरतीब

अध्याय नंबर	विषय	पेज	अध्याय नंबर	विषय	पेज
1	मुक़ददिमा	1	14	बाहमी हमदरदी का महीना	27
2	शहरु रमज़ान	2	15	सदक़ा व ख़ैरात का महीना	29
3	ख़ुश आमदीद रमज़ान	3	16	क़ियाम का महीना	31
4	इस्तक़बाल रमज़ान	5	17	रमज़ान और उमराह	33
5	रेहमत का महीना	6	18	रमज़ान और आख़री अशराह	34
6	रोजों का महीना	7	19	रमज़ान और ऐताकाफ़ की सुन्नत	35
7	सहरी और इफ़्तारी का महीना	10	20	रमज़ान और शबे क़द्र	37
8	बख़्शिश का महीना	13	21	रोजे के ऐहकाम	40
9	तक़वा का महीना	15	22	अलविदा रमज़ान	42
10	सब्र का महीना	17	23	ईदुल फ़ितर	44
11	क़ुरआन का महीना	19	24	तक्बीरात	45
12	दुआ का महीना	22	25	शववाल के रोज़े	46
13	ज़िक्र का महीना	24			

मुक़दिमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ کَفٰی وَ سَلَامٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

अल्लाह ताला ने इन्सान को बनाया और वही इसका राज़िक़ है-उसने इन्सान की ज़रुरियात पूरी करने के लिए आसमान से रिज़्क़ के साथ साथ हिदायत भी उतारी और ज़िन्दगी के हर मामले में अपनी मख़लूक़ की रहनुमाइ फ़रमाई -ख़ालिक़े कायनात ने ये भी बताया के मैंने जिन व इन्स को अपनी इबादत के लिए पैदा किया-इस मक़्सद के लिए उसने रसूल भेजे और उनके ज़रिए इन्सान को अपनी इबादत के अमली तरीक़े सिखाए-

आख़री पैग़मबर मोहम्मद ﷺ के ज़रिए दीन को मुकम्मल किया-आप ﷺ ने ज़िन्दगी के ख़्वाह वो इबादात हों या मामलात इन सब में बेहतरीन मयार क़ाइम करके दिखाया-इबादात में नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात की अदायगी को फ़र्ज़ का दर्जा दिया गया-

नमाज़ रोज़ाना की इबादत है जब के रोज़ा सालाना इबादत है जिस के लिए अल्लाह ताला ने रमज़ान के मुबारक महीने का इन्तेख़ाब किया और उसे दूसरे महीनों पर फ़ज़ीलत बख़्शी-रमज़ान की इसी फ़ज़ीलत और एहमियतको उजागर करने के लिए ये किताब लिखी गई है ताके इस माह में शऊरी इबादत के ज़रिए इसकी रेहमतों और बरकतों से भरपूर इस्तफ़ादा किया जा सके-

अल्लाह बुज़ुर्ग बरतर से दुआ है के वो रमज़ान में ख़ुलूसे नियत के साथ कसरत से नेकियां करने और बुराइयों से बचने की तोफ़ीक़ अता फ़रमाए और तक़र्रुब इलल्लाह के रास्ते की तमाम अन्दरुनी और बेरुनी रुकावटों को दूर करदे और इस कोशिश को अपने लिए ख़ालिस करले,और उन तमाम लोगों को जिन्होंने इस की तैयारी में किसी भी तरह से मदद की उन्हें अजरे अज़ीम अता फ़रमाए, उसे आख़िरत में कामयाबी का ज़रिया बनादे और उसे पढ़ने वालों के लिए फ़ायदामंद बनादे -आमीन

फ़रहत हाशमी
१अगसट२०११
२९ शाबान १४३२ह

रमज़ान की क़ीमती घड़ियों से भर पूर फायदा उठाने के लिए रेहनुमा किताब ख़ुद पढ़िए और दूसरों को भी बताईए

شَهْرُ رَمَضَانَ

الَّذِیٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ

هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ

فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ

وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۗ

يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ

وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ

وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰكُمْ

وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (البقرة:185)

" रमज़ान वो महीना है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया है

जो इन्सानों कि लिए हिदायत है और एसी वाज़ह तालीमात पर मुश्तमिल है जो राहे रास्त

दिखाने वाली और हक़ व बातिल का फ़रक़ खोलकर रख देने वाली हैं

पस जो कोई तुम में से इस महीने को पाए उसको लाज़िम है के इस महीने के रोज़े रखे

और जो कोइ मरीज़ हो या सफ़र पर हो तो वो दूसरे दिनों में रोज़ों की तादाद पूरी करे-

अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है,सख़्ती करना नहीं चाहता

और ये के तुम रोज़ों की तादाद पूरी करो

और जिस हिदायत से अल्लाह ने तुम्हें नवाज़ा है

उस पर उसकी बड़ाई बयान करो

ताके तुम शुक्र गुज़ार बनो-

مَرْحَبا رَمَضان

ख़ुश आमदीद रमज़ान

शाबान का चाँद तुलू होते ही रमज़ान की ख़ुश्बू आने लगती है- दिल में ख़ुशी के जज़बात उमंडने लगते हैं और ऐसा क्यों ना हो एक मोअज़्ज़िज़ मेहमान की आमद आमद है जो सब के लिए रेहमतों,बर्कतों और सादतों के ख़ज़ाने लिए आ रहा है-कितने ही लोग हैं जो हमारे साथ गुज़िश्ता रमज़ान में इबादत कर रहे थे मगर! आज वो दुनिया में मौजूद नहीं.......आज वो मसाजिद में नहीं.......क़बरिस्तानों में हैं.......

कितने ही लोग हैं जो जिस्मानी या ज़ेहनी बीमारी,बुढ़ापे या किसी और उज़्र की वजह से रोज़ा रखने से आजिज़ हैं-पस वो ख़ुश नसीब जिन्हें इस रमज़ान से फ़ायदे का मोक़ा मिल रहा है उन्हें चाहिए के पूरी मोहब्बत से रमज़ान को ख़ुश आमदीद कहें,नेकी के तमाम मोक़ों से ख़ूब फ़ायदा उठाने के लिए पूरे जोष से तैयारी शिरु करदें और रमज़ान की आमद के साथ नेकियों में आगे बढ़ने की पुकार पर दिलो जान से लब्बैक कहें-

नबी अकरम ने फ़रमाया:

وَيُنادِى مُنادٍ : يَابَاغِىَ الخَيرِ ! اَقبِل وَيَاباغِىَ الشَّرِّ ! اَقصِر.

"और एक पुकारने वाला पुकार कर कहता है:ए नेकियों के तालिब! आगे बढ़ और ए बुराइयों के तालिब! बाज़आजा”

करने के काम

- माह शाबान के पेहले १५ दिनों में रोज़े रखें ख़ास तौर से गुज़रे रमज़ान के क़ज़ा रोज़े लेकिन १५ शाबान के बाद रमज़ान की तैयारी और जिस्म की ताक़त को बहाल रखने के लिए रोज़े ना रखें-

- ऐसी किताबों को पढ़ें या लेक्चरज़ सुनें जिन के बाद रोज़े से मुताल्लिक़ एहकामात ताज़ा हो जाऐं ताके पूरे आदाब व शराइत के साथ रोज़ा रख सकें -

- घर वालों,दोस्त ऐहबाब और हमसायों के साथ रमज़ान के बारे में बाहम गुफ़्तगु करके उन्हें ज़हनी तौर पर रमज़ान के लिए तैयार करें-

- रमज़ान से मुताल्लिक़ मालुमात,किताबें,केसिटस,सी डीज़ लोगों तक पहुंचाऐं या उन्हें तोहफ़ा दें-

- घर की सफ़ाई अच्छी तरह करलें-तमाम चीज़ों को सही तरीक़े से रखलें जैसे काम के दौरान
- क़ुरआन मजीद सुन्ने के लिए सी डी और केसिट पलेयर,दुआओं की किताबें वग़ैरा-

•तमाम ज़रूरी काम जैसे माहाना राशन,तमाम घर वाले,मुलाज़मीन और ज़ैर किफ़ालत इफ़राद के लिए ईद के कपडे,दोस्तों रिश्तेदारों के लिए ईद के तहाइफ़ वग़ैरा की ख़रीदारी करलें ताके रमज़ान की इबादत में ख़लल ना हो

•सदक़ा व ख़ैरात के लिए रक़म और ज़रुरी चीज़ें अलग करलें और इस बात का भी सोचलें किस किस को,कितना,क्या,और कब देना है-

•रोज़ाना के कामों की लिस्ट बनालें इसी तरह इबादात जैसे क़ुरआन मजीद की तिलावत, हिफ़्ज़,नवाफ़िल ज़िक्र,दुआ और सदक़ा वग़ैरा के लिए एहदाफ़(goals) का तायुन करने के अलावा उन के लिए वक़्त की मन्सूबा बन्दी भी करलें-

•आसानी के लिए दिन के वक़्त को नीचे दिए हुए तरीक़े पर तक़सीम करलें,**फ़ज्र से सूरज के तुलु होने तक** नमाज़ फ़ज्र,तिलावत क़ुरआन मजीद,सुब्ह के अज़कार,मुतालेआ दीनी किताबों का सूरज के **•तुलु से ज़ोहर तक** इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल,दोराय क़ुरआन सुन्ना या करवाना, नमाज़ ज़ोहर और रोज़ाना के काम काज **•ज़ोहर से असर तक** क़ेलूला व दूसरे ज़रुरी काम और नमाज़ असर **•असर से मग़रिब तक** अफ़तारी की तैयारी,शाम के अज़कार व दुआऐं **•मग़रिब से इशा तक** इफ़्तारी,नमाज़ मग़रिब,खाना और तरावीह की तैयारी फिर नमाज़ इशा और तरावीह के बाद रात का एक हिस्सा आराम,सेहरी से पहले नवाफ़िल,अस्तग़फ़ार और सेहरी की तैयारी और फिर नए दिन का आग़ाज़-

•इस बात का पक्का इरादा करलें के इस माह में ईमानी व रूहानी तरक़्क़ी,इख़्लाक़ी बेहतरी और नेकियों में सब्क़त लेजाना है और इस रमज़ान को पिछले रमज़ान से बेहतर बनाना है-

•याद रखें ! के ये गिन्ती के चन्द दिन हैं लेहाज़ा ज़्यादा वक़्त इबादात और बाइसे अज्र कामों पर लगाऐं

•मुबाह और ज़ाती ज़रुरियात की कोशिशों पर कम वक़्त लगाऐं

•ग़ैर ज़रुरी मसरुफ़ियात तरक करदें -

-

اِسْتِقْبَالُ رَمَضَان

इस्तक़बाल रमज़ान
दुआओं के साथ

रमज़ान का चाँद देखने का ऐहतमाम करें क्यों के आमद रमज़ान का फैसला चाँद देखने पर होता है नबी अकरम ﷺ ने फ़र्माया:

اذَا رَاَيتم الهِلالَ فَصُومُوا وَاِذا رَاَيتُمُوهُ فَاَفطِرُوا فَاِن غُمَّ عَلَيكُم فَصُومُوا ثَلاثِينَ يَومًا
(صحيح مسلم:٢٥١٤)

" जब तुम(रमज़ान का)चाँद देखो तो रोज़ा रखो और जब(शवाल का)चाँद देखो तो इफ़्तार करो

और अगर आसमान

पर बादल हों तो तीस रोज़े पूरे करलो-"

रमज़ान का इस्तक़बाल ख़ुशी और दुआओं के साथ करें और चाँद देखकर नीचे लिखी हूई दुआऐं मांगें-

اَللّٰهُمَّ اَهِللهُ عَلَيْنَا بِاليُمنِ وَالاِيمَانِ وَالسَّلامَةِ وَالاِسلام رَبِّى وَرَبُّكَ اللهُ.

(سنن الترمذى:٣٤٥١)

"या अल्लाह! हम पर यह चाँद अमन,ईमान,सलामती और इस्लाम के साथ तुलू फ़र्मा,(ऐ चाँद!)मेरा और तेरा
रब अल्लाह है-"

اَللهُ اَكبرُ, اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالاَمنِ وَالاِيمَانِ وَالسَّلامَةِ وَالاِسلامِ وَالتَّوفِيقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرضى رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللهُ. (الكلم الطيب: ١٦٢)

"अल्लाह सब से बङा है-ऐ अल्लाह! यह चाँद हम पर अमन,ईमान,सलामती और इस्लाम के साथ तुलू फ़र्मा
और इस चीज़ की तौफ़ीक़ के साथ जिसको तू पसंद करता है और जिस से तू राज़ी होता है-(ऐ

चाँद!)हमारा और
तेरा रब अल्लाह है-"

अल्लाह करे हमारा यह रमज़ान गुज़िश्ता तमाम रमज़ानों से बेहतर हो! आमीन

رَمَضَان

شَهرُ الرَّحمَةِ وَالبَرَكَةِ

रेहमत का महीना

रमज़ान वो मुबारक महीना है,जिस में अल्लाह ताला अपने बन्दों पर ख़ास रेहमतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाता है-शयातीन को क़ैद करके अपने बन्दों को नेकी के कामों की रग़बत दिलाता है ताके भलाई के काम करना उन्के लिए आसान हो जाऐं-
रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

اِذا كَانَ رَمَضَانُ فُتِحَت اَبوَابُ الرَّحْمَةِ .

(صحيح مسلم:٢٤٩٦)

" जब रमज़ान का महीना आता है तो रेहमत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं-"

: एक और रिवायत में आता है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया

قَد جَآءَكُم رَمضَان, شَهر مُبَارَكٌ, اِفتَرَضَ اللهُ عَلَيكُم صِيَامَهُ, تُفتَحُ فِيهِ اَبوَابُ الجَنَّةِ وَ تُغلَقُ فِيهِ اَبوَابُ الجَحِيمِ وَتُغَلُّ فِيهِ الشَّيَاطِينُ, فِيهِ لَيلَةٌ خَيرٌ مِّن اَلفِ شَهرِ, مَن حُرِمَ خَيرَهَا فَقَد حُرِمَ.

(مسند احمد,ج: ٧١٤٨،١٢)

" तेक़ीक़ तुम्हारे पास रमज़ान आया है-ये बरकतों वाला महीना है-अल्लाह ताला ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किए हैं-इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शयातीन जकड़ दिए जाते हैं- इस में एक रात है जो हज़ार "महीनों से बेहतर है-जो इस की बरकत से मेहरूम रहा तो तेहक़ीक़ वो मेहरूम ही रहा - "

करने के काम

❖ अल्लाह की रेहमत पाने के लिए हर अच्छे काम जैसे इबादात,सदक़ा ख़ैरात,दूसरों की मदद,सलाम
और मुस्कुराहट वग़ैरा में सब्क़त लेजाने की कोशिश करें -

❖ इस दुआ को ज़बानी याद करलें और सुब्ह व शाम पढ़े
:

يَاحَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحمَتِكَ اَستَغِيثُ اَصلِحْ لِى شَانِى كُلَّهُ وَلا تَكِلنِى اِلى نَفسِى طَرفَةَ عَينٍ.

(سنن الكبرى للنسائى: ١٠٤٠٤)

" ऐ ज़िन्दा और क़ाइम रहने वाले! तेरी रेहमत के सबब से फ़रयाद करता हुँ के मेरे सब कामों की इस्लाह फ़रमादे
और पलक झपकने तक के लिए भी मुझे मेरे नफ़स के हवाले ना कर-"

رَمَضَان

شَهْرُ الصِّيَامِ

रोजों का महीना

रोज़ा इस माह की ख़ुसूसी इबादत है।जो शाबान अलमुअज़्ज़म २ हिजरी में फ़र्ज़ किया गया।नबी ﷺ ने अपनी ज़िन्दगी में ९ साल रमज़ानुलमुबारक के रोज़े रखे।रोज़ा पहली उम्मतों पर भी फ़र्ज़ था इस ग़र्ज़ के लिए रमज़ान का महीना उम्मते मुस्लिमा के हिस्से में आया इरशाद बारी ताला है:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ

"ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो !तुम पर रोज़े इस तरह फ़र्ज़ किये गए जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताके तुम मुत्तक़ी बन जाओ। "

दूसरी जगह फ़रमाया : फَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهۡرَ فَلۡيَصُمۡهُ ۖ

"पस तुम में से जो इस महीने को पाए तो चाहिए के वो उसके रोज़े रखे "(अल बक़रा:185)

بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ :شَهَادَةِ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًاعَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ،وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ،،وَاِيْتَاءِالزَّكَاةِ،وحَجَ الْبَيْتِ،وَصَوْمِ رَمَضَانَ،

हदीस से भी रोज़े की फ़र्ज़ियत साबित है: रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है:गवाही देना के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं,नमाज़ क़ाइम करना,ज़कात अदा करना,बैतुल्लाह का हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना ।"(सही मुसलिम :113)

❖ रोज़ा फ़र्ज़ इबादत होने के साथ साथ बेशुमार फायदों का हामिल है और अजर व सवाब कमाने का ज़रिया भी है।जैसा के नीचे दी गई हदीसों से पता चलता है।

रोज़ा जन्नत में दाख़िले का ज़रिया है: अबु उमामा رضي الله عنه ने रसूल अल्लाह ﷺ से ऐसे अमल के बारे में सवाल किया जो उनहें जन्नत में दाख़िल करे तो आप ﷺ ने फ़रमाया:

عَلَيْكَ بِالصَوْم فَاِنَّهُ لَامِثْلِ لَهُ

"तुम रोज़े को लाज़िम पकड़लो के इस की मान्निद कोई चीज़ नहीं है। "

(सुन्न निसाई २२२२)

रोज़ेदार के लिए जन्नत में ख़ास दरवाज़ा है: नबी अकरमﷺ ने फ़रमाया:

اِنَّ فِي الْجَنَّةِ بَابًايُقَالُ لَهُ الرَّيَانُ يُدْعَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُقَالُ

اَيْنَ الصَّائِمُوْنَ؟فَمَنْ كَانَا مِنَ الصَّائِمِيْنَ دَخَلَهُ وَمَنْ دَخَلَهُ لَمْ يَظْمَا اَبَدًا

"जन्नत में एक दरवज़ा है जिसे रैयान कहा जाता है । क़यामत के दिन पुकारा जाएगा रोज़े रखने वाले कहां है?चुनाचे जो शख़्स रोज़ा रखने वालों में से होगा वो इस में से दाख़िल होजाएगा और जो इस में दाख़िल होगया उसे कभी पयास नहीं लगेगी।"(सुन्न इब्ने माजा १६४०)

रोज़ा आग से बचाओ का ज़रिया है : नबी अकरमﷺ ने फ़रमाया:

مَا مِنْ عَبْدٍيَصُوْمُ يَوْمًا فِى سَبِيْلِ اللهِ اِلَّابَعَدَ اللّٰهُ بِذٰلِكَ الْيَوْمِوَجْهَهُ عَنِ النَّارِ سَبْعِيْنَ خَرِيْفًا

"जो शख़्स अल्लाह के रास्ते में एक दिन का रोज़ा रखेगा अल्लाह ताला उस के बदले उस के चेहरे को आग से सत्तर साल की मसाफ़त (दूरी) पर रखेगा। " (सही मुसलिम :2711)

रोज़ेदार के मुँह की बिसांद: नबी अकरमﷺ ने फ़रमाया:

وَالَّذِى نَفْسِى بِيَدِهِ لَخُلُوْفُ فَمِ الصَّا ئِمِ اَطْيَبُ عِنْدَاللهِ مِنْ رِيْحِ الْمِسْك

"क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है रोज़ादार के मुँह की बिसांद अल्लाह ताला को मुशक की ख़ुशबू से ज़्यादा पसंदीदाह है।" (सही बुक़ारी: 1894)

रोज़े की जज़ा ख़ुद अल्लाह ताला देंगे: रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह ताला फ़रमाता है:

كُلُّ عَمَلِ ابْنِ اٰدَمَ لَهُ اِلَّا الصِّيَامَ فَاِنَّهُ لِيْ وَاَنَ اَجْرِىْ بِهِ

"इब्ने आदम के तमाम आमाल उसके लिए हैं सिवाए रोज़े के,बेशक वो मेरे लिए है और मैं ख़ुद उसका बदला दूँगा।**"**(सही बुक़ारी : 1904) ये एक बहुत बड़े शरफ़ की बात है के जहां बाक़ी इबादात का अजर दस से सात सौ गुना बताया वहां रोज़े का अजर मख़्फ़ी (छुपा) रखा गया है क्यों के हक़ीक़त में ये ख़ुद मख़्फ़ी इबादत है।

रोज़ा ढाल है: रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

اَلصِّيَامُ جُنَّةٌمِنَ النَّارِكَجُنَّةِ اَحَدِكُمْ مِنَ الْقِتَالِ

" रोज़ा आग से ढाल है जिस तरह लड़ाई में तुम में से किसी की ढाल होती है । "(सुन्न इब्ने माजा १६३९)
यानी रोज़े की वजह से इन्सान बहुत से उन गुनाह से बच जाता है जिन के इरतेकाब की सूरत में जहन्नम में जासकता है।

अर्बी ज़बान में सियाम " बिलकुल रुक जाने को कहते है " शरई ऐतबार से रोज़ा " इबादत के इरादे से खाने पीने ,मजामेअत और दूसरे रोज़ा तोड़ देने वाली चीज़ों से सुबह सादिक़ के तुलु से सूरज के गुरूब

तक इजतेनाब (बचना) करना है ” मगर याद रहे के रोज़ा सिर्फ़ खाना पीना ही नही बहुत सी बुरी आदात के छुड़ाने का ज़रिया भी है इसी लिए हम देखते हैं के इमाम इब्ने जौज़ी ने रोज़े के तीन दर्जे बताए हैं। ज़रूरत इस बात की है के हम अपना जाएज़ा लें के हमारा रोज़ा किस दर्जे का है।

1.आम रोज़ा

आम रोज़ा तो ये है के ख़ुद को पेट भरने और शहवत रानी से रोके।

२. ख़ास रोज़ा

ख़ास रोज़ा ये है के नज़र, ज़बान, हाथ पाऊं, कान और तमाम आज़ा को गुनाह से बचाए।

३.ख़ासुल ख़ास रोज़ा

ख़ासुल ख़ास रोज़ा ये है के दिल को रददी ख़्यालात और अल्लाह ताला से दूर करने वाले अफ़कार से पाक कर करदे और उस की याद के सिवा हर चीज़ से रुक जाए ।

(मिन्हाजुल क़ासिदीन :77)

करने के काम

⁕रोज़ा एक फ़र्ज इबादत है जिसे ख़ालिस नियत के साथ सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए रखें।

⁕किसी शराई उज़्र के बग़ैर रोज़ा हरगिज़ ना छोड़े।

⁕रोज़े को बातिल करने वाले कामों से बचें।

⁕रोज़े की हालत में ख़ास तौर पर ज़बान की हिफ़ाज़त करें।

⁕घर में इबादत के लिए एक ख़ास जगह मुक़र्रर करलें।जहां ज़रूरत की ताम चीज़ें मौजूद हों मस्लन जाए नमाज़,क़ुरआन मजीद, ज़िक्र व अज़कार की किताबें वग़ैरा। इस से वक़्त की बचत होगी।

नबी अकरमﷺने फ़रमाया

مَنْ صَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًاوَاحْتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِه

जिसने इमान के साथ और सवाब की नियत से रमज़ान के रोज़े रखे उसके गुज़िश्ता (पिछले) सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।(सही बुख़ारी :38) ।

।

رمضان

شَهرُالسُّحُورِ وَالاِفطَارِ

सहरी और इफ़्तारी का महीना

रोज़ा नफ़्स को अल्लाह की इताअत का पाबंद बनाता है।बन्दा अल्लाह के हुक्म से एक ख़ास वक़्त तक खाना पीना छोड़ देता है और एक ख़ास वक़त में (सहरी) चाहे उसका दिल ना भी चाह रहा हो तो अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए खाता है।बाज़ औक़ात सहरी खाने में नापसंदीदगी का इज़्हार किया जाता है बाज़ लोग सहरी करते ही नहीं बाज़ वक़्त से पहले ही खालेते हैं जबके ताख़ीर (देरसे) खाना अख़्लाक़े नबुव्वत में से है।

عَن اَبِی الدَّرداءِ رَفَعَهُ قَالَ : ثَلَاثٌ مِن اَخلَاقِ النُّبُوَّةِ تَعجِيلُوا الاِفطَارِ وَتَاخِيرُوا السَّحَورِ وَ وَضعُ اليَمِينِ عَلَى الشِّمَالِ فِى الصَّلَوةِ ۔(صحيح الجامع الصغير:١،٣٠٣٨)

"अबु दरदा رضي الله عنه से रिवायत है रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: तीन काम अख़्लाक़े नबुव्वत में से हैं इफ़्तारी में जल्दी ,सहरी में ताख़ीर और नमाज़ में दाऐं (हाथ) को बाऐं पर रखना ।"

सहरी का ऐहतमाम ज़रूर करना चाहिए : मोमिन के लिए सहरी खाने में बरकत है और सहरी खाना नबी अकरम ﷺ की सुन्नत है। नबी अकरम ﷺ ने फरमाया :

تَسَحَّرُوا فَاِنَّ فِى السَّحُورِ بَرَكَةٌ۔

(صحيح بخارى:1923)

"सहरी खाओ क्यों के सहरी में बरकत है।"हज़रत अरबाज़ बिन सारया رضي الله عنه कहते हैं मुझे रसुल अल्लाह ﷺ ने रमज़ान में सहरी पर बुलाया और फ़रमाया:

هَلُمَّ اِلَى الغَدَاءِ المُبَارَكِ۔ (سنن ابی داؤد:٢٣٤٤)

"आओ मुबारक खाना खालो।"

सहरी अल्लाह की अता है:

عَن عَبدَ اللهِبنِ الحَارِثِ عَن رَجُلٍ اَصحَابِ اَن النَّبِيِّ ﷺ اَنَّا رَجُلًا دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يَتَسَحَّرُ فَقَالَ اِنَّ اَلسَّحُورَ بَرَكَةٌ اَعطَا كُمُوهَا اللهُ فَلَا تَدَعُوهَا۔(مسند احمد،ج:٣٨،٢٣١٤٢)

"

अबदुल्लाह बिन हारिस رضي الله عنه नबी ﷺ के एक सहाबी रिवायत करते हैं के एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जब के नबी करीम ﷺ सहरी खारहे थे आप ﷺ ने फ़रमाया ये सहरी बरकत है जो अल्लाह ने तुम्हें अता फ़रमाई है इसलिए इसे मत छोड़ा करो।"

عَنِ المِقدَامِ بنِ مَعدِ يُكَرِبَ عَنِ النَّبِيِّ صلی اللہ علیہ وسلم قَالَ عَلَيكُم بِغَدَاءِ السُّحُورِ فَاِنَّهُ هُوَ الغَدَاءُ المُبَارَكُ ۔
(سنن النسائی:۲۱۶۶)

मिक़दाम बिन माद यकरब رضي الله عن से रिवायत है नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:तुम लोग अपने ऊपर सुबह का खाना (यानी सहरी) लाज़िम करो के वो सुबह का मुबारक खाना है।

सहरी ज़रूर करो अगरचे पानी का एक घूंट ही पीलिया जाए:

قَالَ رَسُولَ اللهِ صلی اللہ علیہ وسلم السُّحُورُ اَكلُهُ بَرَكَةٌ فَلَا تَدعُوهُ وَلَو اَن يَجرَعَ اَحَدَكُم جُرعَةً مِن مَاءٍ۔
(مسند احمد۱۷:۱۱۰۸٦)

रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया: "सहरी खाना बाइसे बरकत है इसलिए इसे तर्क ना किया करो ख़्वाह पानी का एक घूंट ही पीलिया करो।"

सहरी खाने वालों पर रेहमतें नाज़िल होती हैं :हज़रत इबने उमर رضي الله عنه से रिवायत है रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

اِنَّ اللهَ وَمَلٰئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى المُتَسَحِّرِينَ۔(المعجم الاوسط الطبرانی،ج:۷،۶۴۳۰)

"यक़ीनन अल्लाह और उसके फ़रिश्ते सहरी खाने वालों पर दुरूद भेजते हैं ।"यानी अल्लाह ताला की तरफ़ से उनपर रेहमतें और बरकतें उतरती हैं और फ़रिश्ते उनके लिए रेहमत और मग़फ़िरत की दुआऐं करते हैं।

खुजूर बेहतरीन सहरी है: नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

نِعمَ سَحُورُ المُؤمِنِ التَّمرُ۔
(سنن ابی داؤد:۲۳۴۵)

"खुजूर मोमिन की बेहतरीन सहरी है।"सहरी में मुतावाज़न ग़िज़ाऐं इस्तेमाल करें ताके दिन भर तरोताज़ा रहें और सही तौर पर फ़राइज़ और दीगर इबादात अदा करसकें।

इफ़्तारी का वक़्त ख़ुशी का वक़्त है: नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

لِلصَّائِمِ فَرحَتَانِ يَفرَحُهُمَا اِذَا اَفطَرَ فَرِحَ وَاِذَا لَقِىَ رَبَّهُ فَرِحَ بِصَومِهِ۔(صحیح بخاری:۱۹۰۴)

"रोज़दार को दो खुशियां हासिल होती हैं ।एक उस वक़्त जब वो इफ़्तार करता है और दूसरे जब वो अपने रब से मुलाक़ात करेगा तो रोज़े का सवाब देखकर ख़ुश होगा।"

इफ़्तार जल्दी करना मसनून है:चुनांचे सूरज गुरूब होते ही रोज़ा इफ़्तार करलेना चाहिए रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

لَا يَزَالُ النَّاسُ بِخَيرٍ مَّا عَجَّلُوا الفِطرَ)صحیح بخاری:۔۱۹۵۷

"जब तक लोग इफ़्तार करने में जल्दी करते रहेंगे भलाई पर रहेंगे।"

रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

اِذَا كَانَ اَحدَكُم صَائِمًا فَليُفطِر عَلَى التَّمرِ۔ فَاِن لَم يَجِدِ التَّمرَ فَعَلَى المَاءِ فَاِنَّ المَاءَ طَهُورٌ۔(صحیح الجامع الصغیر:۷۴٦)

"जब तुम में से किसी ने रोज़ा रखा हो तो उसे चाहिए के खुजूर से इफ़्तार करे।अगर खुजूर ना पाए तो पानी से इफ़्तार करे।बिला शुबा पानी साफ़ करने वाला है।"

كَانَ رَسول اللهِ ﷺ يُفطِرُ عَلَى رُطَبَاتٍ قَبلَ اَن يُصَلِّى۔ فَاِن لَم تَكُن رُطَبَاتٌ فَعَلَى تَمَرَاتٍ فَاِن لَم تَكُن حَسَاحَسَوَاتٍ مِن مَاءٍ۔(سنن ابی داؤد:٢٣٥٦)

"रसूल अल्लाह ﷺ नमाज़ से पेहले ताज़ा खुजूरों से इफ़्तार फ़रमाते।अगर ताज़ा खुजूरें ना होतीं तो ख़ुश्क खुजूरें खाते ।ये भी ना होतीं तो पानी के चंद घूंट पीलिया करते थे।"

इफ़्तारी करवाने का अज्र: रसलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

مَن فَطَّرَ صَائِمًا ، كَانَ لَهُ مِثلُ اَجرِهِ ، غَيرَ اَنَّهُ لَا يَنقَصُ مِن اَجرِ الصَّائِمِ شَيئًا۔(سنن الترمذی:٨٠٧)

" जिसने रोज़ेदार को रोज़ा इफ़्तार कराया उसे भी उतना ही अज्र मिलेगा जितना रोज़ेदार के लिए होगा और रोज़ेदार के उस अज्र से कम कोई चीज़ नहीं होगी।

करने के काम

*सहरी व इफ़्तारी ऐहतमाम ऐतदाल के साथ करें क्यों के ये شهر الطعام नहीं बल्के شهر الصيام है।

*बहुत मुरग़्ग़न गिज़ाओं और पेट भर कर खाने से परहेज़ करें ताके जिस्म में सुसती पैदा ना हो।

*बचा हुआ खाना ज़ाय ना करें बल्के किसी ज़रूरत मंद को दे दें।

इफ़्तार की दुआऐं :रोज़ा खोलते वक़्त रसुल अल्लाह ﷺ ये कलिमात कहते:

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمتُ وَعَلى رِزقِكَ اِفطَرتُ۔

(مشكاة المصابيح :1994)

(ज़ईफ़)

"ऐ अल्लाह! मैं ने तेरे लिए रोज़ा रखा और तेरे ही दिये हुए रिज़्क़ से इफ़्तार किया। "

●ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابتَلَّتِ العُرُوقُ وَثَبَتَ الاَجرُ اِنشَآءَاللهُ۔

(سنن ابی داؤد:٢٣٥٧)

" पयास ख़तम होगई,रगें तर होगईं और (रोज़े का) सवाब इन्शा अल्लाह पक्का होगया । "

रोज़ा इफ़्तार कराने वाले को ये दुआ दें :

اَفطَرَ عِندَكُمُ الصَّائِمُونَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الاَبرَارُ وَصَلَّت عَلَيكُمُ المَلَائِكَةُ۔

(سنن ابی داؤد:٣٨٥٤)

"रोज़ेदार तुम्हारे यहां रोज़ा इफ़्तार करते रहें और नेक लोग तुम्हारा खाना खाते रहें और फ़रिश्ते

رمضان
شَهرُ الغُفرَان
बख़्शिश का महीना

अल्लाह ताला बहुत ग़फ़ूर रहीम है, واسع المغفرة है,माफ़ करने को पसंद करता है,उसका वादा है के जो गुनाहों पर शरमिन्दा हों और सच्चे दिल से तौबा करलें वो उन्हें माफ़ कर देगा-अल्लाह ताला का इर्शाद है:

اَلَّذِينَ يَجتَنِبُونَ كَبٰٓئِرَ الاِثمِ وَالفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ المَغفِرَةِ-(سورة النجم:٣٢)

" वो जो बड़े गुनाहों और बेहयाई से बचते हैं मासिवाए सग़ीरा गुनाहों के तो तेरा रब बड़ा बख़्शिश वाला है "

इन्सान ख़ता का पुतला है-ज़िन्दगी में छोटे बड़े गुनाहों में मुब्तिला होता रहता है जिस पर उस को निदामत और शर्मिन्दगी भी होती है-हर इन्सान चाहता है के किसी तरह इन गुनाहों के बोझ से आज़ाद हो और इस दलदल से बाहर निकल आए-

रमज़ान गुनाहों से पाक होने का बेहतरीन मोक़ा है: नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया

وَرَمَضَانُ اِلَی رَمَضَانَ مُكَفِّرَاتُ مَا بَينَهُنَّ اِذَا اجتُنِبَتِ الكَبَائِرَ-(صحيح مسلم:٥٥٢)

“एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक अपने दर्मियान होने वाले गुनाहों को मिटा देता है जब्के कबीरा गुनाहों से बचा जाए-"

दिन का रोज़ा और रात का क़याम बख़्शिश का ज़रिया हैं: नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

مَن صَامَ رَمَضَانَ اِيمَانًا وَاِحتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِه-(صحيح البخارى:٣٨)

" जिसने ईमान के साथ और सवाब की नियत से रमज़ान के रोज़े रखे उसके गुज़िश्ता सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं-"

रोज़ा दार मर्द औरत के लिए बख़्शिश का वादा है: इर्शाद है:

وَالصَّآئِمِينَ وَالصّٰٓئِمٰتِ.....الخ۔ اَعَدَّ اللهُ لَهُم مَّغفِرَةً وَّاَجرًا عَظِيمًا۔(الاحزاب:٣٥)

" और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें...अल्लाह ने उन्के लिए बख़्शिश और अजरे अज़ीम का वादा फ़रमाया है-"

जो शख़्स रमज़ान पाए और उसकी बख़्शिश ना हो वो बदनसीब है: हज़रत जाबिर बिन समरा رضي الله عنه से रिवायत है के नबी صلی اللہ علیہ وسلم मिम्बर पर चढ़े और फ़रमाया आमीन आमीन आमीन, आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया:मेरे पास जिबरील (अ) आए और कहा

يَا مُحَمَّدُ مَن اَدرَكَ شَهرَرَمَضَانَ فَمَاتَ فَلَمْ يُغفَر لَهُ فَاُدخِلَ النَّارُ فَاَبعَدَهُ اللهُ قُل آمِينَ فَقُلتُ آمِين۔۔(المعجم الکبیر للطبرانی،ج:۲،۲۰۲۲)

ऐ मोहम्मद ﷺ अल्लाह उसे अपनी रेहमत रब्बानी से दूर करे जिसने रमज़ान पाया फिर वो मर गया और उसकी बख़्शिश नहीं हूई हत्ता के वो जहन्नम में दाख़िल कर दिया गया आप कहिए आमीन में ने कहा आमीन....

सेहरी का वक़्त अस्तग़फ़ार के लिए बहुत मोज़ूं है:अल्लाह के ख़ास बन्दों की सिफ़त है के वो उस वक़्त अल्लाह से सरगोशियां करके अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते हैं अल्लाह ताला क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं:

وَبِالاَسحَارِهُم يستَغفِرُونَ۔(الذریت:۱۸)

" और वो सहर के वक़्त अस्तग़फ़ार करते हैं-"

और एक हदीस में आता है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

يَنزِلُ اللهُ تَعَالٰی اِلَی السَّمَاءِ الدُّنيَا كُلَّ لَيلَةٍ لِنِصفِ اللَّيلِ الآخِرِ اَو لِثُلُثِ اللَّيلِ الآخِرِ فَيَقُولُ: مَن ذَالَّذِی يَدعُونِی فَاَسْتَجِيْبَ لَهُ مَنْ ذَلَّذِی يَسَاَلْنِیْ فَاُعطِيَهُ؟ مَن ذَالَّذِی يَستَغفِرنِی فَاَغفِرلَهُ؟ حَتّٰی يَطلُعَ الفَجر

(سنن الدارمی،ج:۱٤۷۸،۱)۔

"

अल्लाह ताला हर रात को आधी रात या एक तेहाइ रात के आख़री हिस्से में आस्माने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमाते हैं और इर्शाद फ़र्माते हैं के कौन है जो मुझसे दुआ मांगे और में उसकी दुआ क़ुबूल करूं,कोइ है जो मुझसे सवाल करे के में उसे अता करूं,कौन है जो मुझसे अस्तग़फ़ार तलब करे और में उसे बख़्श दूं-यहां तक के तुलू फ़ज्र होती है"

करने के काम:

*अपने गुनाहों पर नादिम हो कर ग़ल्तियों का एतराफ़ कर के और रो कर अल्लाह से तौबा करें-तमाम मुसलमानों की बख़्शिश के लिए भी दुआ करें -गुज़िशता गुनाहों की लिस्ट बनाऐं और ख़ास कर वो गुनाह जिन के बारे में शैतान ख़ौफ़ दिलाता है के अल्लाह ताला उन गुनाहों की बख़्शिश नहीं करेगा-

*सेहरी के वक़्त ख़ास तौर पर अस्तग़फ़ार करें और घर वालों को भी याद दिहानी कराऐं-

*दिन में कम अज़ कम सत्तर से सौ बार अस्तग़फ़ार करें-

اَستَغفِرُاللّٰہَ العَظِيمَ الَّذِی لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الحَیُّ القَيُّومُ وَاَتُوبُ اِلَيهِ.

(سنن الترمذی:۳۵۷۷)

" मैं बख़्शिश मांगता हुं अल्लाह से जो बहुत अज़्मत वाला है जिस के सिवा कोइ माबूद बरहक़ नहीं वो हमेशा ज़िन्दा और क़ाइम रहने वाला है और मैं उसकी तरफ़ रुजू करता हुं-"

رَمَضَان

شَهْرُ التَّقْوٰى

तक़वा का महीना

रोज़े का असल मक़सद तक़वा का हुसल है।जैसा के अल्लाह ताला ने फ़रमाया:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا كُتِبَ عَلَيكُم الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبلِكِم لَعَلَّكُم تَتَّقُونَ-(البقرة:١٨٣)

"ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए ताके तुम मुत्तक़ी बन जाओ। "

*तक़वा के माने बचना है।रोज़े की हालत में सिर्फ़ खाने पीने से ही परहेज़ काफ़ी नही बल्के हर क़िसम के गुनाहों से बचना भी ज़रूरी है। रोज़े की हालत में अगर हलाल खाने पीने से परहेज़ करते हैं तो हराम और ममनू कामों यहां तक के बुरे ख़्यालात ,मनफ़ी सोंचों,बद गुमानी, झूठ, चुग़ली, ग़ीबत और ल़ड़ाई झगड़ा करना वग़ैरा से भी परहेज़ लाज़िम है।

*खाना पीना इन्सान का पसंदीदा मशाग़िल में से है जिस पर कन्ट्रोल बहुत मुशकिल है लैकिन रोज़े में भूक का तजर्बा इन्सान के अंदर ऐसी कुव्वत पैदा करता है के वो इस क़ाबिल होसके के वो अल्लाह की ख़ातिर अपने मनफ़ी जज़्बात को भी क़ाबू में रख सके।

हज़रत अबू हुरैराह رضي الله عن से रिवायत है रसुल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

لَيسَ الصِّيَامُ مِنَ الاَكلِ وَالشُّربِ اِنَّمَا الصِّيَامُ مِنَ اللَّغوِ وَالرَّفَثِ فَاِن سَابَّكَ اَحَدٌ اَو جَهِلَ عَلَيكَ فَقُل اِنِّى صَائِمٌ اِنِّى صَائِمٌ-(صحيح الترغيب والترهيب:١٠٨٢)

" रोज़ा सिर्फ़ खाना पीना छोड़ने का नाम नहीं है बल्के रोज़ा तो लग़व(हर बेफायदा बेहुदा काम) और रफ़स (जिन्सी ख़्वाहिशात पर मबनी हरकात और बात) से बचने का नाम है। लिहाज़ा अगर कोई तुमहें(रोज़े के दोरान) गाली दे या जेहालत की बातें करे तो उस से केहदो के मैं रोज़ेदार हूं,मैं रोज़ेदार हूं। "

*रसलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

رُبَّ صَائِمَ لَيسَ لَهُ مِن صِيَامِهِ اِلَّا الجُوعُ وَرُبَّ قَائِمٍ لَيسَ لَهُ مِن قِيَامِهِ اِلَّا السَّهَرُ-

(سنن ابى ماجه:١٦٩٠)

“ बाज़ रोज़ेदारों को रोज़े से भूक के सिवा कुछ हासिल नहीं होता और बाज़ क़याम करने वालों को क़याम से बेदारी के सिवा कुछ नहीं मिलता।"

हज़रत अबू हुरैराह رضي الله عن से रिवायत है रसुल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया:

مَن لَّم يَدَعَ قَولَ الزُّورِ وَالعَمَلَ بِهِ وَالجَهلَ فَلَيسَ لِلهِ حَاجَةٌ اَن يَدَعُ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ۔

(صحيح البخارى:٦٠٥٧)

"जिसने झूठ, बेहुदा आमाल और बेहुदा बातों को ना छोड़ा तो अल्लाह ताला को कोई ज़रूरत नहीं के वो शख़्स खाना पीना छोड़दे।"

इसलिए एक जगह हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से मरवी है रसुल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया:

مَن لَّم يَدَعِ الخَنَا وَالكَذِبَ فَلا حَاجَةً لِلّٰهِ اَن يَدعَ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ۔

(صحيح الترغيب والترهيب:١٠٨٠)

"जिसने बद ज़बानी और झूठ ना छोड़ा तो अल्लाह ताला को उसके खाना पीना छोड़ देने की कोई ज़रूरत नहीं ।"

इबादत में जिस तरह ज़ाहीरी अरकान की पाबंदी लाज़िमी है उसी तरह बातनी कैफ़ियात मसलन इख़्लास,अल्लाह की मोहबबत, अल्लाह का ख़ौफ़ और अल्लाह से उम्मीद यही तक़्वा है जो मतलूब है।

करने के काम

*रोज़ा रख कर भूक के तजरबे से तक़्वा और तवाज़ो और सबर जैसी सिफ़ात अपनाऐं।
*रोज़ा सिर्फ़ खाने पीने का ही ना हो बल्के आंख ,कान, दिल,ज़बान और हाथ सब का ही रोज़ा रखें।
*अपना ज़्यादा वक़्त मुफ़ीद कामों में सिर्फ़ करें और लग़व बातों से मुमकिन हद तक परहेज़ करें।
*हर दिन को गुज़िश्ता दिन से बेहतर बनाने के लिए अपना जाएज़ा लेते रहें।
*लोगों के साथ मामलात भी अल्लाह की मोहब्बत और अल्लाह के ख़ोफ़ के तेहत करें।
*रोज़ाना ख़ुद को याद दिहानी करवाते रहें के होसकता है के आज मेरी ज़िन्दगी का आख़री दिन हो ताके हर काम बेहतरीन तरीक़े से करसकें।
*तक़्वा के हुसूल के लिए ये दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَسئَلُكَ الهُدى وَالتُّقى وَالعَفَافَ وَالغِنٰى.

(صحيح مسلم:٦٩٠٦)

ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझ से हिदायत ,तक़्वा,पाकदामनी और बे नियाज़ी का सवाल करता हूं।

رَمَضَان

شَهْرُ الصَّبْرِ

सब्र का महीना

सब्र का मतलब है रुकना अपने आप को थामना । ज़िन्दगी मे इन्सान को बारहा बहुत से ना ख़ुशगवार वाक़ेआत का तजर्बा होता है।बसा औक़ात दूसरों की ज़्यादती का निशाना बनना पड़ता है।ऐसे में अगर इन्सान जल्द बाज़ी से काम लेते हुए फौरी मनफ़ी रददे अमल का इज़्हार करे तो मामला मज़ीद ख़राब होजाता है।इस का वाहिद हल सब्र है।कोई भी ग़लत क़दम उठाते हुए रोज़ा इन्सान को बारहा याद दिहानी करवाता है के वो लड़ाई झगड़े और हंगामे से परहेज़ करे और ऐसे में वो उन अलफाज़ को ढाल इस्तेमाल करता है के اِنِّی امرُؤٌ صَائِمٌ۔ के मैं रोज़े से हुं यानी मैं ख़ुद को कन्ट्रोल करसकता हूँ,मैं सब्र करना जानता हूँ। नबी अकरम ﷺ ने फरमाया :

اَلصِّيَامُ جُنَّةٌ وَاِذَا كَانَ يَومُ صَومِ اَحَدِكُم فَلَا يَرفُثْ وَلَا يَصخَب فَاِن سَابَّهُ اَحَدٌ اَو قَاتَلَهُ فَلْيَقُل اِنِّی امرُؤٌصَائِمٌ۔(صحیح بخاری:۱۹۰٤)

"रोज़ा एक ढाल है ।जब तुम मेंसे किसी का रोज़ा होतो वो फ़हश गोई ना करे और ना शोरो शग़ब करे अगर कोई उसे गाली दे या उस से लड़ने की कोशिश करे तो कहदे मैं रोज़ेदार आदमी हूँ।"

रोज़ा कीना को दूर करने का ज़रिया भी है। रसलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

صَومُ شَهرِ الصَّبرِ وَثَلَاثَةِ اَيَّامٍ مِن كُلِّ شَهرٍ يُذهِبنَ وَحَرَ الصَّدرِ۔(صحیح الترغیب والترھیب:۱۰۳۲)

"सब्र के महीने (माहे रमज़ान) के और हर महीने के तीन रोज़े रखना सीने के कीने को दूर करदेता है।"

रोज़ा इन्सान की पसंदीदा चीज़ों पर रोक लगा कर उसे सब्र की तरबियत देता है।दुनिया और आख़िरत की कामयाबी के लिए सब्र निहायत ज़रूरी है।क़ुरआने मजीद में आता है:

اِنِّی جَزَيتُهُمُ اليَومَ بِمَا صَبَرُوآ اَنَّهُم هُمُ الفَآئِزُون(المؤمنون:۱۱۱)

"आज मैं ने उन्हें उन के सब्र करने पर बदला देदिया और वही कामयाब होने वाले हैं।"

*लोगों स मामला करते हुए अगर किसी ना मवाफ़िक़ बात से वास्ता पड़े और दूसरा शख़्स ऐसी बात कहदे जिससे रोज़ेदार को गुस्सा आजाए तो उसे अपने रोज़े का ख़्याल करते हुए सब्र व तहम्मुल से काम लेना चाहिए ख़ास तौर पर कोशिश करे के गुस्सा के वक़्त खामोश रहे ।सब्र अगरचे मुशकिल काम है मगर उस का बदला जन्नत है अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:

وَجَزٰهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَّحَرِيرًا۔(الدھر:۱۲)

"और उनके सब्र की वजह से उनका बदला जन्नत और हरीर (रेशम) होगा।" सब्र अगरचे मुशकिल काम है लेकिन सब्र करने वालों को बे हिसाब अज्र दिया जाएगा।

قُل يٰعِبَادِ الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُم۔ لِلَّذِينَ اَحسَنُوا فِی هٰذِهِ الدُّنيَا حَسَنَةً۔ وَاَرضُ اللهِ وَاسِعَةٌ۔ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُونَ اَجرَهُم بِغَيرِ حِسَابٍ۔ (ا لزمر:۱۰)

"केहदो के ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो अपने रब से डरो, जिन्होंने इस दुनिया में नेकी की उन के लिए भलाईयां हैं और अल्लाह की ज़मीन कुशादाह(वसी) है ,सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा।"

करने के काम

*हर मुशकिल मरहले पर सब्र से काम लें।

*ज़बान की ख़ास हिफ़ाज़त करें और ग़लत बात ना करने का पुख़्ता इरादा करलें

*अपना ग़ुस्सा ज़बत करें दूसरों को ग़ुस्से में देखें तो सब्र की तलक़ीन करें।

*खुद को याद दिहानी कराते रहें के मनफ़ी रददे अमल शर का रास्ता खोलेगा और मसबत रददे *अमल ख़ैर का दरवाज़ा खोलेगा।

وَمَن يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرهُ اللهُ وَمَا اُعطِىَ اَحَدٌ عَطَاءً خَيرًا وَّاَوسَعَ مِنَ الصَّبرِ۔(صحیح بخاری:۱٤٦۹)

और जो सब्र की कोशिश करे,अल्लाह उसे सब्र अता करता है,सब्र से बेहतर और वसी किसी को कोई चीज़ नहीं मिली।

رَمَضَان
شَهرُ القُرآنِ

क़ुरआन का महीना

क़ुरआन मजीद अल्लाह का कलाम है।जिसे अल्लाह ताला ने इन्सानों की हिदायत के लिए उतारा और उस के नुज़ूल के लिए रमज़ान के महीने की बाबर्कत रात को चुना । इरशाद बारीताला है:

اِنَّا اَنزَلنٰهُ فِی لَیلَةٍ مُّبٰرَکَةٍ اِنَّا کُنَّا مُنذِرِینَ(الدخان:٣)

"बेशक हमने उसको एक मुबारक रात में उतारा है क्यों के हम ही ख़बरदार करने वाले थे "

एक और जगह आता है:

شَهرُ رَمَضَانَ الَّذِی اُنزِلَ فِیهِ القُرآنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِنَ الهُدی وَالفُرقَانِ .(البقرة:١٨٥)

"रमज़ान वो महीना है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया जो इन्सानों के लिए हिदायत है और ऐसी वाज़ेह तालीमात पर मुश्तमिल है जो राहे रास्त दिखाने वाली और हक़ व बातिल का फ़र्क़ खोलकर रखदेने वाली हैं "

रमज़ान में नबी अकरम ﷺ जिबराईल (अ) को क़ुरआन सुनाते ।अबदुल्लाह رضي الله عنه बयान फ़रमाते हैं

وَكَانَ جِبرِیلُ یَلقَاهُ كُلَّ لَیلَةٍ فِی رَمَضَانَ حَتَّی یَنسَلِخَ یَعرِضُ عَلَیهِ النَّبِیُّ ﷺ القُرآنَ (صحیح بخاری:١٩٠٢)

"रमज़ान में हर रात जिबराईल (अ) आप ﷺ से मुलाक़ात करते थे और नबी अकरम ﷺ रमज़ान गुज़रने तक इन्हें क़ुरआन सुनाते। "

एक और हदीस से ये भी पता चलता है के आप ﷺ हर साल जिबराईल (अ) को एक बार क़ुरआन (का नाज़िल शुदा हिस्सा) सुनाते और (वफ़ात से पहले)आख़री साल आप ﷺ ने दो बार सुनाया ।(صحیح بخاری:3624)

इन हदीसों से हमें रमज़ान में क़ुरआन मजीद के साथ आप ﷺ के ख़ुसूसी ताल्लुक़ का पता चलता है। इसलिए हमें भी इस बाबर्कत महीने में क़ुरआन मजीद के साथ अपना ताल्लुक़ इन तरीक़ों से क़ाईम करना चाहिए।

तिलावत क़ुरआन मजीद : क़ुरआन मजीद अर्बी में नाज़िल हुआ,इसलिए उसके मतन(text) की अर्बी में तिलावत बाईस सवाब है।अल्लाह ताला ने क़ुरआन मजीद पढ़ने वालों को ऐसी कामियाब तिजारत की ख़ुश्ख़बरी दी है जिस में किसी क़िसम का घाटा नहीं फ़रमाया:

اِنَّ الَّذِينَ يَتلُونَ كِتبَ اللهِ وَاَقَامُوا الصَّلوةَ وَاَنفَقُوا مِمَّا رَزَقنهُم سِرًا وَّعَلانِيَةً يَّرجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ.(فاطر:٢٩)

“जो लोग किताबुल्लाह की तिलावत करते है और नमाज़ क़ाईम करते हैं,और जो कुछ हमने उन्हें रिज़्क़ दिया है उसमें से खुले और छिपे खर्च करते हैं,यक़ीनन वो एक ऐसी तिजारत की उम्मीद रखते हैं जिस में ख़सारा ना होगा" लिहाज़ा इस महीने में दूसरे दिनों की निसबत तिलावते क़ुरआन में ज़्यादा वक़्त लगाना चाहिए।

क़ियामुल लैल में तिलावते क़ुरआन :तरावीह या क़ियामुल लैल में क़ुरआन मजीद पढ़ना और सुनना बाईसे शिफ़ाअत है।

हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه रिवायत करते हैं के रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया

اَلصِّيَامُ وَالقُرآنُ يَشفَعَانِ لِلعَبدِ يَومَ القِيَامةِ يَقُولُ الصِّيامُ اَى رَبِّ مَنَعتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَواتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعنِى فِيهِ وَيَقُولُ القُرآنُ مَنَعتُهُ النَّومَ بِالَّيلِ فَشَفِّعنِى فِيهِ قَالَ فَيُشَفَّعَانِ.

(مسند احمد:ج ١١،٦٦٢٦)

"रोज़ा और क़ुरआन क़यामत के दिन बन्दे के लिए सिफ़ारिश करेंगे।रोज़ा कहेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने इस बन्दे को खाने पीने और अपनी ख़्वाहिश (पूरी करने)से रोके रखा लिहाज़ा इस के बारे में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फरमा।क़ुरआन कहेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने इस बन्दे को रात को सोने से रोके रखा (क़ियाम के लिए) लिहाज़ा इस के बारे में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फरमा,चुनांचे दोनों की सिफ़रिश क़ुबूल की जाएगी। "

इसी तरह अबदुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه की हदीस से ये भी पता चलता है के क़ुरआन मजीद बनिस्बत दिन के रात को पढ़ना ज़्यादा अफ़ज़ल है क्यों के आप صلى الله عليه وسلم हर रात जिबराईल (अ) को क़ुरआन सुनाते

आप صلى الله عليه وسلم ने रमज़ान के आख़री अशरे की तीन रातों में तवील क़िरात के साथ तरावीह की जमात कराई (بحواله صحيح بخاری٢٠١٢)

हिफ़्ज़े क़ुरआन: क़ुरआन मजीद देख कर पढ़ने के अलावा उसे सीने में महफ़ूज़ करना भी सआदत की बात है हज़रत अबदुल्लाह बिन अमर बिन आस رضي الله عنه से रिवायत है के नबी अकरम ने صلى الله عليه وسلم फ़रमाया (بحواله صحيح بخاریء)

:ء

يُقَالَ لِصَاحِبِ القُرآنِ :اِقرَأ وَارتَقِ وَرَتِّل كَما كُنتَ تُرَتِّلُ فِى الدُّنيَا، فَاِنَّ مَنزِلَكَ عِندَ اخِرِ ايَةٍ تَقرَؤُهَا.(سنن ابی داؤد: ١٤٦٤)

"साहिबे क़ुरआन से (रोज़े क़यामत) कहा जाएगा : क़ुरआन पढ़ता जा और चढ़ता जा और इस तरह आहिस्ता आहिस्ता तिलावत कर जिस तरह तू दुनिया में तरतील से पढ़ता था पस तेरा मक़ाम वो होगा जहां तेरी आख़री आयत की तिलावत ख़तम होगी।"

तदब्बुरे क़ुरआन: क़ुरआन मजीद की आयात पर ग़ौरो फ़िक्र करना भी बहुत अजर का सबब है ।इसी लिए क़ुरआन मजीद की आयात पर ग़ौरो फ़िक्र किया जाए ताके किताबे हिदायत से अमली रहनुमाई भी होसके क्यों के ये किताब इन्सानों की हिदायत के लिए उतारी गई है। इरशाद बारी ताला है:

كِتٰبٌ اَنزَلنٰهُ اِلَيكَ مُبرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوآ ايتِه وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الاَلبَابِ.(ص:٢٩)

"ये बाबर्कत किताब है जिसे हमने आप की तरफ़ नाज़िल किया ताके लोग इसकी आयात पर ग़ौरो फ़िक्र करें और अक़ल वाले नसीहत हासिल करें।"

तालीमुल क़ुरआन : अकेले तिलावत व तदब्बुर के अलावा सबके साथ मिल बैठ कर क़ुरआन मजीद का पढ़ना और पढ़ाना बहुत सी रेहमतों का सबब बनता है।हज़रत अबू हुरैराह رضي الله عنه केहते है के रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया :

وَمَا اجتَمَعَ قَومٌ فِى بَيتٍ مِن بُيُوتِ اللهِ يَتلُونَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَا رَسُونَه بَينَهُم اِلّا نَزَلَت عَلَيهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتهُمُ الرَّحمَةُ وَحَفَّتهُمُ المَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيمَن عِندَهُ

जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में ईकट्ठे हों वो अल्लाह की किताब पढ़ें और उसको पढ़ाऐं। उनपर इत्मीनान नाज़िल होता है,रहमत उन्हें ढांप लेती है ,फ़रिश्ते उनके गिर्द घेरा डाल लेते हैं और अल्लाह ताला उन लोगों का ज़िक्र उन फ़रिश्तों से करता है जो उसके पास मौजूद हैं।(صحيح مسلم: ٦٨٥٣)

करने के काम

*रमज़ान में क़ुरआन मजीद की तिलावत कसरत से करें,कम से कम एक क़ुरान मजीद ख़ुद पढ़ कर मुकम्मल करें।

*क़ुरआन मजीद का कुछ हिस्सा हिफ़ज़ करने की कोशिश करें अगर आप हाफ़िज़ हैं तो बाक़ाएदा दोहराई का ऐहतमाम करें ।

*तरावीह में मुकम्मल क़ुरआन मजीद सुनने का ऐहतमाम करें ।

*क़ुरान मजीद को समझने और तर्जुमा जानने के लिए दौराए क़ुरआन मजीद की किसी मजलिस में शिरकत करें या घर बैठे आनलाईन सुनें।

*अपने ऐहलो अयाल और दोस्तों को भी क़ुरआन पढ़ने की तरफ़ मुतावज्जह करें

*तिलावत और तरजुमा क़ुरआन पर मबनी केसिटस और सीडी ख़ुद भी सुनें और दूसरों को भी सुनने के लिए दें।

قُل بِفَضلِ اللهِ وَبِرَحمَتِه فَبِذٰلِكَ فَليَفرَحُوا . وَهُوَ خَيرٌ مِّمَّا يَجمَعُونَ.

(يونس:٥٨)

केहदो के (ये किताब) अल्लाह के फ़ज़ल और उस की महरबानी से (नाज़िल हुई है) तो चाहिए के लोग उससे ख़ुश हों,ये उस से कहीं बेहतर है जो वो जमा करते हैं।

رَمَضَان

شَهرُ الدُّعَاءِ

दुआ का महीना

रमज़ान और रोज़े के मुताल्लिक़ उमूर का ज़िक्र करने के बाद अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِی عَنِّی فَاِنِّی قَرِیبٌ اُجِیبُ دَعوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلیَستَجِیبُوا لِی وَلیُؤمِنُوا بِی لَعَلَّهُم یَرشُدُونَ۔(البقرة: ١٨٦)

"और जब मेरे बन्दे मेरे बारे में आप صلى الله عليه وسلم से पूछें तो केहदें के मैं क़रीब हूँ ।मैं पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब भी वो मुझे पुकारे,पस चाहिए के वो मेरी बात मानलें और मुझ पर ईमान लाऐं ताके वो हिदायत पाऐं"

रमज़ान में कसरत से दुआऐं करनी चाहिएं क्योंके उस में क़ुबूलियत दुआ के बहुत मौक़े हैं।

रोज़ेदार की दुआ क़ुबूल की जाती है जैसे के हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत है के रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया :

ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ لَا تُرَدُّ دَعوَةُ الوَالِدِ وَدَعوَةُ الصَّائِمِ وَدَعوَةُ المُسَافِرِ۔(سنن الكبرى البيهقى: ٦٤٨٤)

"तीन आदमियों की दुआ रद नहीं की जाती- बाप,रोज़दार और मुसाफ़िर की "

एक और रिवायत में हज़रत अबु सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से मरवी है के रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया :

اِنَّ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی عُتَقَاءَ فِی كُلِّ یَومٍ وَلَیلَةٍ یَعنِی فِی رَمَضَانَ وَاِنَّ لِكُلِّ مُسلِمٍ فِی كُلِّ یَومٍ وَلَیلَةٍ دَعوَةً مُستَجَابَةً۔(صحيح الترغيب الترهيب:١٠٠٢)

"बेशक अल्लाह ताला माहे रमज़ान के हर दिन और रात में (लोगों को जहन्नम से) आज़ाद करते हैं ।और (माहे रमज़ान के) हर दिन रात में हर मुसलमान के लिए एक ऐसी दुआ है जिसे क़ुबूलियत से नवाज़ा जाता है ।"

इफ़्तारी का वक़्त दुआओं की क़ुबूलियत का वक़्त है हज़रत अबदुल्लाह बिन अमर बिन आस رضي الله عنه से रिवायत है के रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया :

اِنَّ لِلصَّائِمِ عِندَ فِطرِهِ لَدَعوَةً مَا تُرَدُّ۔(صحيح مستدرك حاكم:١٤٢٢)(ज़ईफ़)

"बिला शुबा रोज़ेदार के लिए इफ़्तारी के वक़्त एक ऐसी दुआ है जिसे रद नही किया जाता "

अल्लाह ताला को उस के अच्छे अच्छे नामों के साथ पुकारें क्योंके ये दुआओं की क़ुबूलियत का ज़रिया है।

करने के काम

*रमज़ान के दिनों को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब दुआऐं मांगें ।

*कभी तन्हाई में रो रो कर और गिड़ गिड़ा कर भी दुआऐं करें।

*फ़र्ज़ नमाजों, तिलावत क़ुरआन के बाद और सहर व इफ़्तार के औक़ात में अपने और दूसरों के लिए दुआऐं मांगें।

*दुआओं की किताब मसलन क़ुरआनी व मसनून दुआऐं ज़बानी याद करने की कोशिश करें।

*मुख़्तलिफ़ मोक़ों से मुताल्लिक़ मसनून दुआऐं ज़बानी याद करने की कोशिश करें।

*नमाज़ से 15 मिनिट पेहले मस्जिद चलेजाऐं। क़ुरआन मजीद पढ़ें,ज़िक्र करें ,अज़ान सुन कर जवाब दें , दुआ मांगें क्यों के अज़ान और अक़ामत का दर्मियानी वक़्त दुआओं की क़ुबूलियत का वक़्त है लिहाज़ा इन घड़ियों से फ़ायदा उठाऐं।

بسم الله

يا الله!

يا رَحمن يا رحيم

يا ذالجلال والاكرام

يا احدُ يا صمدُ

يا وِترُ يا فردُ

يا مجيب الدَّعواتِ

يا بَديعَ السمواتِ

يا رب!

मुझे ईमान,इख़्लास,तक़वा और अख़लाक़े हसना अता फ़रमा।

आमीन

رَمَضَان

شَهْرُ الذِّكْرِ

ज़िक्र का महीना

बन्दे मोमिन अल्लाह के ज़िक्र से कभी ग़ाफ़िल नहीं होता हर मौक़े पर अपने रब को याद करता है ख़ास तौर पर रमज़ान में जब वो रोज़े से होता है तो उसका दिल अल्लाह की तरफ़ ज़्यादा माइल रहता है लिहाज़ा उठते ,बैठते और लेटते हर हाल में शऊरी तौर पर अल्लाह को याद करना चाहिए।क़ुरआन मजीद में अक़्ल वालों के बारे में अल्लाह ताला फ़रमाते हैं

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللهَ قِيَامًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِهِم-(ال عمران:١٩١)

"जो उठते बैठते और लेटे हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं "

नबी अकरम ﷺ हर हाल में अल्लाह ताला का ज़िक्र करते थे और दूसरों को भी उस की ताकीद करते हज़रत अबदुल्लाह बिन बसर رضي الله عنه से रिवायत है के

اَنَّ رَجلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ اِنَّ شَرَائِعَ الاِسلَامِ قَد كَثُرَت عَلَيَّ، فَاَخبِرنِى بِشَىءٍ اَتَشَبَّثُ بِهِ قَالَ : لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطبًا مِن ذِكرِ اللهِ-(سنن ترمذى:٣٣٧٥)

" एक शख़्स ने अर्ज़ किया,या रसूल अल्लाह ﷺ इस्लाम के एहकाम तो मेरे लिए बहुत हैं, पस आप मुझे ऐसी बात बताइए जिस को में मज़बूती से पकड़लूं, आप ﷺ ने फ़रमाया : तेरी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे "

عَن اَبِى هُرَيرَةَ ، اَنَّ رَسُولَ اللهِ قَالَ: مَن قَال : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلكُ وَلَهُ الحَمدُ وَهُوَ عَلى كُلِّ شَىءٍ قَدِيرٌ، فِى يَومٍ مِائَةَ مَرَّةٍ ، كَانَت لَهُ عَدلَ عَشرِ رِقَابٍ وَكُتِبَت لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ، وَ مُحِيَت عَنهُ مِائَةُ سَيِّئَة ، وَ كَانَت لَهُ حِرزًا مِنَ الشَّيطَانِ ، يَومَهُ ذٰلِكَ حَتَّى يُمسِيَ ، وَلَم يَأتِ اَحَدٌ بِاَفضَلَ مِمَّا جَآءَ بِهِ اِلَّا اَحَدٌ عَمِلَ اَكثَرَمِن ذٰلِكَ وَمَن قَالَ سَبحَانَ اللهِ وَبِحَمدِهِ فِى يَومٍ، مِائَةَ مَرَّةٍ ، حُطَّت خَطَايَاهُ ، وَلَو كَانَت مِثلَ زَبَدِ البَحرِ-(صحيح مسلم:٦٨٤٢)

हज़रत अबू हुरैराह से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:जिसने एक दिन में सौ बार ये कहा

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلكُ وَلَهُ الحَمدُ
وَهُوَ عَلى كُلِّ شَىءٍ قَدِير۔

तो उसको दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उस के लिए सौ नेकियां लिखी जाऐंगी और उस की सौ बुराईयां माफ़ होंगी और उस दिन शाम तक वो शैतान के शर से मेहफ़ूज़ रहेगा और रोज़े क़यामत उस से अफ़ज़ल अमल कोई ना लाएगा मगर वो शख़्स जिस ने उससे ज़्यादा बार यही कहा हो।और जिस ने दिन में सौ बार कहा तो उस की ख़ताऐं माफ़ करदी जाऐंगी चाहे वो समन्दर की झाग के बराबर क्यों ना हों।"

करने के काम

*रमज़ान के दिन और रात में हर वक़्त अपनी ज़बान को अल्लाह की याद से तर रखें।

*सुब्ह व शाम और नमाज़ के बाद के अज़्कार की पाबन्दी करें। उसके लिए किताब واياك نستعين देखिए।

*घर के कामों के दौरान ख़ुसूसन खाना बनाते वक़्त भी अज़्कार का विर्द जारी रखें।

*पैदल चलते हुए और गाड़ी में भी ज़िक्र इलाही करते रहें

*ज़िक्र एक जामे लफ़्ज़ है जिस में अल्लाह की तसबीह (سبحان الله), तमजीद (الحمد لله), तकबीर (الله اكبر) और तहलील (لا اله الا الله) सब शामिल हैं ।सहुलत के लिए चंद अज़्कार नीचे लिखे हैं उनको पढ़ते रहें

तसबीहात

سُبحَانَ اللهِ وَبِحَمدِه

(صحيح مسلم ٦٨٤٢) (सौ बार)

" अल्लाह पाक है और उसी की तारीफ़ है। "

سُبحَانَ اللهِ وَالحَمدُلِلهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكبَر ۔

"अल्लाह पाक है,तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है,अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं है और अल्लाह सब से बड़ा है।"

(صحيح مسلم : ٦٨٤٧)

سُبحَانَ اللهِ وَبِحَمدِهِ عَدَدَ خَلقِه وَرِضَا نَفسِهِ وزِنَةَ عَرشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ۔

(صحيح مسلم:٦٩١٣)

"पाक है अल्लाह और उसी की तारीफ़ है उस की मख़लूक़ की तादाद के बराबर,उस की ज़ात की रज़ा के बराबर ,उस के अरश के वज़न और उसके कलिमात की स्याही के बराबर ।"

दुरूद शरीफ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ۔

(سنن النسائی:١٢٩٣)

"ऐ अल्लाह! मोहम्मद ﷺ और आले मोहम्मद ﷺ पर रेहमत नाज़िल फ़रमा।"

आयत करीमाः

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنتَ سُبحَانَكَ اِنِّى كُنتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ۔

(سنن ترمذی:٣٥٠٥)

"तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ,पाक है तू, बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूं।"

असतग़फ़ार:

استَغفِرُ اللهَ العَظِيمَ الَّذِى لا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الحَيُّ القَيُّومُ وَاَتُوبُ عِلَيهِ

(سنن ترمذی: ٣٥٧٧).

"मैं बख़्शिश मांगता हूं अल्लाह से जो बहुत अज़मत वाला है जिस के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं वो हमेशा ज़िन्दा और क़ाइम रहने वाला है और में उसकी तरफ़ रुजू करता हूं।"

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلكُ وَلَهُ الحَمدُ وَهُوَ عَلى كُلِّ شَىءٍقَدِير۔

(صحیح مسلم:٦٨٤٢)

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं ,वो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं ,उसके लिए बादशाहत है और उसी के लिए तारीफ़ है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है ।"

رَمَضَان
شَهْرُ الْمُؤَاسَاةِ

बाहमी हमदरदी का महीना

रमज़ान का महीना شَهْرُالْمُوءَاسَاةِ भी है। यानी इन्सानों के साथ बाहमी हमदर्दी और ग़मख़वारी का महीना है।खास तौर पर मोआश और रिज़्क़ के मामले में एक दूसरे की तंगी और मेहरूमी ,परेशानी और दुख में शिरकत और मदद का महीना है।

नबी अकरम صلى الله عليه وسلم ने फ़माया:

مِن اَفضَلِ العَمَلَ اِدخَالُ السُّرُور عَلَى المُؤمِن يَقضِى عَنهُ دَينًا يَقضِى لَهُ حَاجَةً يُنَفِّسُ عَنهُ كُربَةً-(شعب الایمان،ج6:،7679)

" बेहतरीन अमल मोमिन को ख़ुश करना,,उसका क़र्ज़ अदा करना,उस की ज़रूरत पूरी करना और उस से कोइ तकलीफ़ और सख़्ती दूर करना है "

*नबी अकरम صلى الله عليه وسلم ने फ़रमायाL:

اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيهِ وَسَلَّم قَالَ : اَنَّ المُؤمِنَ لَيُدرِكُ بِحُسنِ الخُلُقِ دَرَجَةَ الصَّائِمِ القَائِمِ-

(سنن ابی داؤد(4798:)

"मोमिन अच्छे अख़लाक़ के साथ उस शख़्स का मर्तबा हासिल करलेता जो दिन को रखता है और रात को क़ियाम करता हो।"

रोज़ादार को माहे रमज़ान में खुद भूका पयासा रह कर दिल में उन हाजत मंदों का दर्द मेहसूस करने का मौक़ा मिलता है जो अकसर बेशतर फ़क़्र व फाक़ा में मुब्तिला रहते हैं युं उसके दिल के अंदर नर्मी पैदा होती है और वो दूसरों की ज़रूरियात पूरी करने की कोशिश करता है।

रमज़ान में असलाफ़ की मसाजिद उन खानों से भर जाया करती थीं जो वो फ़ुक़रा और मसाकीन के लिए पेश किया करते थे और जिस किसी को भी खिलाते अल्लाह की मोहब्बत में खिलाते ।जैसा के अल्लाह सुब्हाना व ताला का इर्शाद हैः

وَيُطعِمُونَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖمِسكِينًا وَّيَتِيمًا وَّاَسِيرًا-

(الدهر:٨)

" और वो उस(अल्लाह)की मोहब्बत में मिसकीन ,यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं- हजरत आईशा رضي الله عنه से मरवी हैं के एक बार नबी अकरम صلى الله عليه وسلم के पास कहीं से गोह आई,आप صلى الله عليه وسلم ने उसे खाया ना ही उस से मना किया । मैं ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या हम ये मिस्किनों को ना खिलादें ?

आप صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया:

لَا تُطعِمُوهُم مِمَّا لَا تَاكُلُونَ.

(مسند احمد:٢٤٧٣٦)

"जो चीज़ तुम ख़ुद नहीं खाते वो उन्हें भी मत दो। "

करने के काम

*रमज़ान में अल्लाह की तमाम मख़्लूक़ के साथ भलाई के तरीक़े सोचें । बाहम उलफ़त व मोहब्बत की फ़िज़ा को रिवाज दें।

*फ़ेमली के साथ मिलकर इफ़्तार करें। रिश्तेदारों,हमसायों ,दोस्तों को इफ़्तार पर बुलाऐं

*बेवाओं, यतीमों और मोहताजों और बीमारों की ख़बर गीरी करें।

*हस्पतालों में मरीज़ों और उनके साथियों की ज़रूरियात पूरी करने के लिए जाऐं।

*क़ैदीयों की भी ख़बर गीरी और मुमकिना मदद करें ।

*किसी सवाली को ख़ाली हाथ ना लौटाऐं।

*नोकरों को कामों में छूट दें।

*बुज़ुर्गों का ऐहतराम और बच्चों के साथ नर्मी का सुलूक आम दिनों से ज़्यादा करें।

*रिश्तेदारों से सिला रेहमी करें और उनकी ज़रूरियात मालूम करें ताके उनकी मदद कर सकें।

*आपस में नाराज़ रिश्तेदारों और दोस्तों की सुलाह करवाऐं जो रूठे हुए हैं उनहें मनालें ।

*लोगों की तरफ़ से दिल साफ़ करें और उन के क़ुसूर माफ़ करदें ताके हर एक के साथ एहसान करसकें ।

*नेकियों के काम में किसी ना किसी को अपने साथ शरीक करलें इसतरह बहुत से काम असान होजाऐंगे -

*अपने दोस्तों और साथियों के साथ मिलकर मुख़्तलिफ़ ज़रूरत की चीज़ें,खाना कपड़ा,केसिट,कार्ड वगैरा बाटें।

*अयामे हैज़ में ख़्वातीन जब नमाज़ रोज़ा अदा ना कर सकने की वजह से परेशान होजाती हैं। उसको दूर करने के लिए वो ज़िक्र करने ,तिलावत और लेक्चर्ज़ सुन्ने के अलावा ख़िदमते ख़ल्क़ में अपना वक़्त लगाऐं।

رَمَضَان
شَهْرُ الصَّدَقَةِ
सदक़ा व ख़ैरात का महीना

रमज़ान सख़ावत का महीना है इस माहे मुबारक में नबी अकरम ﷺ की सख़ावत की कोई इन्तेहा ना रहती। हज़रत अबदुल्लाह बिन अबबास رضي الله عنه बयान करते हैं:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اجوَدَ النَّاسَ بِالخَيرِ وَكَانَ اَجوَدُ مَا يَكُونُ فِى رَمَضَانَ حِينَ يلقَاهُ جِبرِيلُ وَكَانَ جِبرِيلُ يَلقَاهُ كُلَّ لَيلَةٍ فِى رَمَضَانَ حَتَّى يَنسَلِخَ يَعرِضُ عَلَيهِ النَّبِيُّ ﷺ القُرآنَ فَاِذَا لَقِيَهُ جِبرِيلُ كَانَ اَجوَدَ بِالخَيرِ مِنَ الرِّيحِ المُرسَلَةِ.(صحيح بخارى:١٩٠٢)

" नबी अकरम ﷺ लोगों के साथ भलाई करने में बहुत सख़ी थे और रमज़ान में जब जिब्राईल (अ) आप ﷺ से मिलते तो आप ﷺ और भी ज़्यादा सख़ी होजाते।रमज़ान में हर रात जिब्राईल (अ) आप ﷺ से मिला करते और नबी अकरम ﷺ रमज़ान गुज़रने तक इन्हें क़ुरान सुनाते,जब जिब्राईल (अ) आप ﷺ से मिलते तो आप ﷺ फ़ैयाज़ी में तेज़ हवाओं की मान्निद हो जाते। "

इस हदीस से ये बात सामने आती है नबी अकरम ﷺ रमज़ान में बाक़ी तमाम साल की निसबत ज़्यादा सदक़ा व ख़ैरात करते और उस सदक़े का फायदा हर एक को पहुँचता जिस तरह तेज़ हवा हर जगह पहुँच जाती है। इसी तरह हमें भी चाहिए के इस माह में ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करें और याद रखेंके सदक़ा करने से माल कम नहीं होता बल्के अल्लाह ताला उसका अजर कई गुना बढ़ा देते हैं।

एहलो अयाल,रिश्तेदारों,फ़ुक़रा और मसाकीन पर ख़र्च करने के अलावा नेकी के दीगर कामों मसलन मसाजिद की तामीर व तरक़्क़ी ,मुसाफ़िर ख़ानों के क़ियाम व बेहतरी,कुओं की खुदाई और पीने के पानी का इन्तेज़ाम भी करना चाहिए ।

इसी तरह दीन की तालीम व तबलीग़ औ उस राह में निकले हुए तालिबे इल्मों के तालीमी अख़राजात पर ख़र्च करना बेहतरीन सदक़ा जारिया का काम है क्यों के फ़ी सबील अल्लाह ख़र्च किए जाने वाले माल को अल्लाह ताला अपने ज़िम्मे क़रज़ शुमार करते हैं ।ये बहुत बड़ी ख़ुश ख़बरी है। इर्शाद बारी ताला है:

مَن ذَالَّذِى يُقرِضُ اللهَ قَرضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ اَضعَافًا كَثِيرَةً.

(البقرة:245)

" कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना दे ताके अल्लाह उसे कई गुना बढ़ा कर उसको वापस करदे । "

रमज़ान की मुनासिबत से रोज़दारों की इफ़्तारी के लिए माल खर्च करना भी बाईसे अजर व सवाब है।एक हदीस में आता है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

❖مَن فَطَّرَ صَائِمًا كَانَ لَهُ مِثْلُ اَجرِهِ غَيرَ اَنَّهُ لَا يَنقُصُ مِن اَجرِ الصَّائِمِ شَيئًا۔(سنن ترمذی:۸۰۷)

"जिसने किसी रोज़ेदार का रोज़ा इफ़्तार करवाया उसे भी उतना ही अजर मिलेग जितना अजर रोज़ेदार के लिए होगा और रोज़ेदार के अजर में कुछ भी कमी ना होगी।"

एक दूसरी रिवायत में है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

❖مَن فَطَّرَ صَائِمًا اَو جَهَّزَ غَازِيًا فَلَهُ مِثْلُ اَجرِه۔(سنن الکبری البیہقی:۸۱٤۰)

"जिस किसी ने किसी रोज़ेदार का रोज़ा इफ़्तार कराया किसी ज़रूरत मंद मुजाहिद को सामान दिया तो उसको उस के बराबर सवाब मिलेगा ।"

करने के काम

*माह रमज़ान में अपनी हैसियत के मुताबिक़ दिल खोल कर अल्लाह की राह में ख़र्च करें।

*बीवी,बच्चों,वालदैन और रिश्तेदारों सब पर मारूफ़ तरीक़े के मुताबिक़ ख़र्च करें।

*ज़्यादा से ज़्यादा रोज़ेदारों की इफ़्तारी का एहतेमाम करें ख़ुसूसन फ़ुक़रा,मसाकीन और ज़रूरत मंदों को याद रखें।

*कमियुनिटी के तमाम ज़रूरत मंदों की मदद करें।

*इल्मे दीन के हुसूल के लिए निकलने वाले तालिबे इल्मों पर अपना माल लगा कर सदक़ा जारिया कमाऐं।

*मसाजिद और दीनी इदारों और हसपतालों वग़ैरा की तामीर व तरक़्क़ी में अपना हिस्सा डालें।

*तालीम व तबलीग़ और दीन की नशर व ईशाअत में भी ख़र्च करें।

*अगर ज़कात वाजिबुल अदा हो तो नफ़ीली सदक़ात से पेहले फ़र्ज़ अदा करें।

*अच्छी बात और मुसकुराना भी सदक़ा है इस का भी ऐहतमाम करें।

رَمَضَان

شَهْرُ الْقِيَامِ

क़ियाम का महीना

अल्लाह ने इन्सानों को अपनी इबादत के लिए पैदा कियाऔर इबादत के तरीक़े और औक़ात भी बताए।रमज़ान वो महीना है जिस में बहुतसी इबादात को जमा कर दिया गया ।इबादत में सब से एहम चीज़ फ़र्ज़ नमाज़ों की बर वक़त अदाईगी है इस के अलावा नवाफ़िल (चाशत व इश्राक़ वग़ैरा) अल्लाह के क़ुर्ब का ज़रिया हैंऔर रमज़ान की रातों में इख़्लास के साथ क़ियाम करने पर पिछले सारे गुनाहों की बख़्शिश की ख़ुश खबरी दी गई है। नबी अकरम ﷺ ने फरमाया :

مَن قَامَ رَمَضَانَ اِيمَانًا وَاحتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِهِ.

(صحیح بخاری:۳۷)

" जिसने ईमान के साथ और सवाब की नियत से रमज़ान की रातों में क़ियाम किया उसके गुज़रिशता सारे गुनाह माफ़ कर दिये गए। "

अल्लाह के नेक बन्दे हमेशा रात की इबादत का एहतेमाम करते हैं। इरशाद बारी ताला है:

تَتَجَافٰى جُنُوبُهُم عَنِ المَضَاجِعِ يَدعُونَ رَبَّهُم خَوفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقنٰهُم يُنفِقُونَ۔(السجدة:۱٦)

"उनके पेहलू बिसतरों से अलग रहते हैं और वो अपने रब को ख़ौफ़ और उमीद की हालत में पुकारते हैं और उसमें से जो हमने उनको रिज़क़ दिया है वो ख़र्च करते हैं।"

आम दिनों में क़ियामुल लैल करना एक मुशकिल काम है लेकिन रमज़ान की बरकत और बाजमात नमाज़े तरावीह की सरत में ये आसान होजाता है।मुत्तक़ीन की सिफ़ात बयान करते हुए अल्लाह ताला ने फ़रमाया:

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيلِ مَا يَهجَعُونَ۔ وَبِالاَسحَارِهُم يَستَغفِرُونَ

۔(الذریت:۱۸،۱۷)

"वो रात को कम सोते हैं और सहर के वक़त इस्तेग़फ़ार करते है।"

रसलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

افضَلَ الصَّلٰوةِ بَعدَ الفَرِيضَةِ صَلَاةُ اللَّيلِ.

(صحیح مسلم:۲۷۵۵)

"फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद अफ़ज़ल तरीन नमाज़ ,रात की नमाज़ है।"

अबु अमामा से रिवायत है के रसलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

عَلَيكُم بِقِيَامِ اللَّيلِ فَاِنَّهُ دَابُ الصَّالِحِينَ قَبلَكُم وَهُوَ قُربَةٌ لَّكُم اِلى رَبِّكُم وَمُكَفِّرَةٌ لِلسَّيِّئَاتِ وَ مَنهَاةٌ عَنِ الاِثمِ-(ابن خزيمه،ج١١٣٥:٢)

"तहाजुद ज़रर पड़ा करो ,क्योंके वो तुमसे पेहले सालिहीन की रविश है और तुमहारे लिए अपने रब से कुर्ब का वसीला,गुनाहों को मिटाने का ज़रिया और गुनाहों से बचने का सबब है।"

तराविह पड़ना सुननत है और नबी ﷺ के क़ोल और फ़ेल दोनों से साबित है।आप ﷺ अपने सहाबा को भी क़ियाम रमज़ान की तरग़ीब देते थे।

तराविह जमात के साथ पड़ना अफ़ज़ल है।आपने अपने घरवालों और बीवीयों को भी तरावीह की जमात में शरीक किया और तवील क़ियाम किया ख़ुसूसन आख़री अशरे में रात के क़ियाम के लिए जगाया।

"हज़रत अबुज़र رضي الله عنه फ़रमाते हैंके हमने रसलुल्लाह ﷺ के साथ रोज़े रखे। आप ﷺ ने तेइसवी रात तक हमारे साथ रात की नमाज़ नहीं पढ़ी(यानी तराविह) फिर तेइसवी रात को हमें लेकर खड़े हुए यहाँ तक के तिहाई रात गुज़र गई फिर चौबिसवी रात को नमाज़ मा पढ़ाई लेकिन पच्चिसवी रात को आधी रात तक नमाज़ (तरावीह) पढ़ाई। हमने अरज़ किया या रसलुल्लाह ﷺ (हमारी आरज़ू थी के) आप ﷺ बाक़ी रात भी हमारे साथ नवाफ़िल पड़ते आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स इमाम के साथ उसके फ़ारिग़ होने तक नमाज़ में शरीक रहा उसके लिए पूरी रात का क़ियाम लिखदिया गया है फिर आप ﷺ ने सत्ताईसवी रात तक नमाज़ ना पढ़ाई। सत्ताईसवी रात को फिर खड़े मारे साथ अपने घरवालों और औरतों को भी बुलाया यहा तक के हमें अन्देशा हुआ के फ़लाह का वक़्त ना निकल जाए रावी केहते हैं मैं ने अबुज़र رضي الله عنه से पूछा फलाह क्या है तो उन्होंने फ़रमाया सहरी।" (सुनन तिर्मेज़ी ८०६)

करने के काम

*इशराक़ और चाशत के नवाफ़िल की अदाइगी का एहतेमाम करें।

*क़रीबी मसजिद में तराविह बाजमात अदा करें।

*तराविह से पेहले उन आयात का तर्जुमा पड़ कर जाऐं जो इमाम पढ़ने जारहा है।

*नमाज़ों में सिर्फ़ नवाफ़िल की तेदाद पर नहीं बल्के दिल की कैफ़ियतऐर ख़ुशु पर भी ख़ास तवज्जह दें।

*फ़र्ज़ नमाज़ों में आम दिनों की निसबत लंबा क़ियाम करें।

नमाज़ों में सुसती और ताक़ीर मुनाफ़िक़त की अलामत है,हर फ़र्ज़ नमाज़ अवल वक़्त में अदा करने की कोशिश करें।

رَمَضَانُ وَالْعُمْرَةُ

रमज़ान और उमराह

अल्लाह के घर की ज़ियारत हम सबके दिल की तमन्ना है,हज और उमराह के लिए हर मोमिन का दिल तड़पता है।रमज़ान जहां दीगर इबादात का अज्र व सवाब बढ़ादेता है वहां उमराह का सवाब हज के बराबर होजाता है।इसकी दलील हमें नीचे दी गई हदीसों से मिलती है। हज़रत इब्ने अबबास رضي الله عنه से रिवायत है के जब रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم हज्जतुल विदा से वापस हुए तो आप صلى الله عليه وسلم ने उम्मे सनान अनसारिया رضي الله عنه से पूछा के

مَا مَنَعَكِ مِنَ الحَجِّ؟ قَالَت : اَبُو فُلانٍ تَعنِى زَوجَهَا كَانَ لَهُ نَاضِحَانِ حَجَّ عَلَى اَحَدِهِمَا وَالآخَرُ يَسقِى اَرضًا لَّنَا، قَالَ : فَاِنَّ عُمرَةٌ فِى رَمَضَانَ تَقضِى حَجَّةً اَو حَجَّةً مَعِى۔(صحيح بخارى:١٨٦٣)

"तुम हज करने नहीं गईं ? उन्होंने अर्ज़ किया के फ़ुलांके बाप यानी उनके शौहर के पास दो ऊंट पानी पिलाने के थे।एक पर वो ख़ुद हज पर चले गए और दूसरा हमारी ज़मीन सैराब करता है।आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया के रमज़ान में उमराह करना हज के बराबर या मेरे साथ हज करने के बराबर है।"

एक और रिवायत में आता है के आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया :

فَاِذَا جَآءَ رَمَضَانَ فَاعتَمِرِى فَاِنَّ عُمرَةً فِيهِ تَعدِلُ حَجَّةً۔(صحيح مسلم:٣٠٣٨)

"जब रमज़ान आए तो उमराह करलेना ,उसका सवाब हज के बराबर है।"
एक और रिवायत में है फरमाया :

عُمرَةٌ فِى رَمَضَانَ كَحَجَّةٍ مَّعِى۔

(المعجم الكبر الطبرانى،ج:١:٧٢٢)

"रमज़ान में उमराह करना मेरे साथ हज करने की मानिन्द है।"

नोट: यादरहे के रमज़ान में उमराह अदा करना अज्र के ऐतबार से हज के बराबर है लेकिन इसके अदा करने से फ़्रज़ हज साक़ित (माफ़)नहीं होता।

करने के काम

- ⁎इस्तेताअत हो और अल्लाह तौफ़ीक़ मिल जाए तो उमराह के लिए जाऐं।
- ⁎कमज़ोरी ,बीमारी या किसी वजह से जाना मुमकिन ना हो और इस्तेताअत रखते हों तो किसी और को उमराह करवादें।
- ⁎अगर उमराह नसीब होजाए तो उस वक़्त को ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की इबादत में गुज़ारें।

رَمَضَان
وَالعَشْرُ الاَوَاخِرُ

रमज़ान और आख़री अशराह

रमज़ान सारा ही इबादत का महीना है मगर इस के आख़री अशरे की इबादत की ख़ास फ़ज़ीलत बयान हुई है ।

रमज़ान के आख़री दस दिनों में अपने एहलो अयाल को इबादत के लिए ख़ुसूसी तरग़ीब दिलाना नबी अकरम ﷺ की सुन्नत पर अमल करना है। हज़रत आयशा رضي الله عنه फ़रमाती हैं:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا دَخَلَ العَشْرُ شَدَّ مِئزَرَهُ وَاَحيَا لَيلَهُ وَاَيقَظَ اَهلَهُ۔(صحیح بخاری:٢٠٢٤)

"जब रमज़ान का आख़री अशराह शुरू होता तो नबी अकरम ﷺ (इबादत) के लिए) कमरबसता होजाते ,रातों को जागते और अपने एहले ख़ाना को भी जगाते।"

एक और रिवायत में हज़रत आयशा رضي الله عنه फ़रमाती हैं :

كَانَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَجتَهِدُ فِى العَشرِ الاَوَاخِرِ مَالَا يَجتَهِدُ فِى غَيرِهِ۔(صحیح مسلم:٢٧٨٨)

"रसुल अल्लाह ﷺ आम दिनों के निस्बत आख़री अशराह में खूब मेहनत और कोशिश करते।"

आप ﷺ फ़ातिमा رضي الله عنه और अली رضي الله عنه का दरवाज़ा भी खटखटाते और फ़रमाते :

اَلَا تَقُومَانِ فَتُصلِيَانِ

(معجم ابن الاعرابی:٢٣٣٢)۔

"क्या तुम दोनों नमाज़ पढ़ने के लिए उठोगे नहीं।"

करने के काम

*आख़री अशराह में ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त इबादत में गुज़ारें।
*अगर मुमकिन हो तो छुट्टी लेलें और इबादत के लिए यकसू होजाऐं।
*तरावीह,तहाज्जुद वग़ैरा में जितना होसके लंबा क़्याम करें।
*कसरत से तिलावत क़ुरआन मजीद और ज़िक्र व अज़कार करें।
*रात को ख़ुद भी जागें और घर वालों को भी इबादत के लिए जागाऐं ।

رَمَضَان
وَسُنَّةُ الْاِعْتِكَافِ
रमज़ान और ऐताकाफ़ की सुन्नत

अल्लाह ताला का क़ुर्ब हासिल करने के लिए इबादत के लिए मस्जिद में रेहना ऐताकाफ़ कहलाता है।ये सुन्नत मोकिदा किफ़ाया है यानी अगर बड़े शेहरों में,दिहातों में कोई भी ऐताकाफ़ ना करे तो सब के ज़िम्मे तर्के सुन्नत का वबाल रेहता है और अगर कोई एक भी ऐताकाफ़ करले तो सब की तरफ़ से सुन्नत अदा होजाती है और उसकी मुद्दत रमज़ान का तीसरा अशराह यानी आख़री दस दिन हैं उस मुद्दत में दुन्यावी कामों,नफ़सानी ख़्वाहिशात,दिल पसंद मशागिल और एहलो अयाल से अलग होकर ख़ुद को सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के लिए वक़्फ़ करदिया जाता है।

हज़रत अबु हुरैराह رضي الله عنه से रिवायत है:

كَانَ النَّبِیُّ صلی اللہ علیہ وسلم يَعتَكِفُ فِی كُلِّ رَمَضَانَ عَشرَةَ اَيَّامٍ فَلَمَّا كَانَ العَامُ الَّذِی قُبِضَ فِيهِ اعتَكَفَ عِشرِينَ يَومًا.(صحیح بخاری:٢٠٤٤)

"हर साल रामज़ान मैं नबी صلی اللہ علیہ وسلم दस दिन ऐताकाफ़ फ़रमाते लेकिन वफ़ात के साल आप صلی اللہ علیہ وسلم ने बीस दिन ऐताकाफ़ फ़रमाया। "

अगर किसी को ऐताकाफ़ के लिए दस दिन मयस्सर (मिल सकें)ना आसकें तो जितने दिन मयस्सर हों उतने दिन ऐताकाफ़ कर लेना चाहिए।

हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से रिवायत है के हज़रत उमर رضي الله عنه ने नबी صلی اللہ علیہ وسلم से पूछा:

يَا رَسُولَ اللهِ صلی اللہ علیہ وسلم اِنِّی نَذَرتُ فِی الجَاهِلِيَّةِ اَن اَعتَكِفَ لَيلَةً فِی المَسجِدِ الحَرَامِ ، قَالَ : اَوفِ بِنَذرِكَ.(صحیح بخاری:٦٦٩٧)

"ऐ अल्लाह के रसूल صلی اللہ علیہ وسلم मैं ने ज़माने जाहिलियत में मस्जिद हराम में एक रात का ऐताकाफ़ करने की नज़र मानी थी आप صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाया :अपनी लज़र पूरी करो।"

عَن عَائِشَةَ اَنَّهَا قَالَت: السُنَّةُ عَلَی المُعتَكِفِ اَن لَا يَعُودَ مَرِيضًا، عَلَی يَشهَدَ جَنَازَةً وَلَا يَمَسَّ امرَاةً وَلَا يُبَاشِرَهَا وَلَا يَخرُجَ لِحَاجَةٍ اِلَّا لِمَا لَا بُدَّ مِنهُ ، وَلَا اعتِكَافَ اِلَّا فِی مَسجِدٍ جَامِعٍ.(سننابی داؤد:٢٤٨٣)

हज़रत आयशा رضي الله عنه फ़रमाती हैं के ऐताकाफ़ करने वालों के लिए ऐताकाफ़ के मामले में सुन्नत ये है के वो ना मरीज़ की अयादत करे ,ना जनाज़े में जाए,ना औरत को हाथ

लगाए और ना उस से मुबाशिरत करे,ना किसी हाजत के लिए मस्जिद से निकले सिवाए उसके के जिस के लिए मस्जिद से निकलने के सिवा कोई चाराह ना हो।और ऐताकाफ़ रोज़े के बग़ैर नहीं होता।और ऐताकाफ़ नहीं होता मगर सिर्फ़ जामे मस्जिद में।

*रमज़ान की 20 तारीख़ को फ़ज्र की नमाज़ के बाद मस्जिद में ऐताकाफ़ के लिए बैठना सुन्नत है।और जब ईद का चाँद नज़र आए तब ऐताकाफ़ से बाहर आजाऐं।

*ऐताकाफ़ के लिए रोज़ा रखना लाज़िम है।

*औरतों को भी ऐताकाफ़ करना चाहिए। हज़रत आयशा رضي الله عنه से रिवायत है नबी ﷺ रमज़ान का आख़री अशराह ऐताकाफ़ करते थे यहां तक के आप ﷺ ने वफ़ात पाई तो आप ﷺ के बाद आप ﷺ की अज़वाज ने ऐताकाफ़ किया। (सही मुसलिम: 2784)

करने के काम

*ज़िन्दगी की एहम मस्रूफ़ियात का कुछ और बनदोबस्त होसके तो ऐताकाफ़ ज़रूर करें।

*ख़ुद ऐताकाफ़ ना करसके तो घर से किसी एक शख़्स को ऐताकाफ़ करने में मदद करें।

*ऐताकाफ़ के अच्छे अनदाज़ में गुज़ारने के लिए वक़्त को बांटदें।

*नवाफ़िल,तिलावतेक़ुरआन,दुआओं,ज़िक्र अज़कार,किताबें पढ़ने और ग़ौर फ़िक्र में वक़्त गुज़ारें

*हर क़िसम के बेकार कामों और मशाग़िल से बचें

*मस्जिद में ऐताकाफ़ के दौरान दूसरे साथीयों के साथ बेकार बातों और बेहस या लड़ाई से ऐहतियात करें।

*ऐताकाफ़ का मक़सद ख़िलवत यानी अकेले रहना है इसलिए ग़ैर ज़रूरी मुलाक़ात से परहेज़ करें।

*दौरान ऐताकाफ़ किसी भी तकलीफ़ पर सब्र से रहें।

رَمَضَان
وَلَيْلَةُ الْقَدْرِ

रमज़ान और शबे क़द्र

लैलतुल क़द्र इन्तेहाई सआदत की रात है।इसी रात को क़ुरआने मजीद नाज़िल हुआ जो इन्सानों की हिदायत का ज़रिया है।

لَيلَةُ القَدرِخيرٌ مِّن اَلفِ شَهرٍ۔(القدر:٣)

शबे क़द्र हज़ारों महीने से ज़्यादा बेहतर है।

*ये रात तुलुए फज्र तक सरा सर सलामती की रात है।

*इस रात की फ़ज़ीलत में पूरी सूरत (सुरेह क़द्र) नाज़िल हुई।

*इस रात को तलाश करते हुए आख़री अशरे की ताक़ रातें इबादत में गुज़ारी जाती हैं।

*इस रात में जिबरील (अ) और फ़रिश्ते ख़ैरो बरकत और रेहमत के साथ उतरते हैं जो तादाद में बहुत ज़्यादा होते हैं।

हज़रत अबु हुरैराह رضي الله عنه से रिवायत है रसलुल्लाह ﷺ फ़रमाया:

إنَّ المَلَائِكَةَ تِلكَ اللَّيلَةَ فِى الاَرضِ اَكثَرُ مِن عَدَدِ الحَصٰى۔ (مسند احمد،ج:١٦،١٠٧٣٤)

“बिलाशुबा इस रात में एक अच्छा अमल हज़ार माह के अमल से बेहतर है।" हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत है के रमज़ान आया तो रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाया:

اِنَّ هذَا الشَّهرَ قَد حَضَرَكُم وَفِيهِ لَيلَةٌ خَيرٌ مِن اَلفِ شَهرٍ۔ مَن حُرِمَهَا فَقَد حُرِمَ الخَيرَ كُلَّهُ وَلَا يُحرَمُ خَيرَهَا اِلَّا مَحرُومٌ۔(سنن ابن ماجه:١٦٤٤)

" ये महीना जो तुम पर आया है इसमें एक ऐसी रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो शख़्स इस से मेहरूम रहा वो हर भलाई से महरूम रहा,इस की सआदत से सिर्फ़ बद नसीब ही को मेहरूम किया जाता है। "

लैलतुल क़द्र की तलाश रमज़ान के आख़री अशरे की ताक़ रातों में करनी चाहिए: हज़रत इबन उमर رضي الله عنه**कहते हैं के** रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

اِلتَمِسُوهَا فِي العَشرِ الاَ وَاخِرِ يَعنِى لَيلَةَ القَدرِ فَاِن ضَعُفَ اَحَدُكُم اَو عَجَزَ فَلَا يَغلَبَنَّ عَلَى السَّبعِ البَوَاقِي-(صحيح مسلم:٢٧٦٥)

"रमज़ान के आख़री अशरे में शबे क़द्र तलाश करो फिर अगर कोई कमज़ोरी दिखाए या आजिज़ हो जाए तो आख़री सात रातों में सुसती ना करे।"

शबे क़द्र की रातों में क़ियाम करना गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया है।हज़रत अबु हुरैराह رضي الله عنهसे मरवी है नबी अकरम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया :

مَن قَامَ لَيلَةِ القَدرِ اِيمَانًا وَاِحتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِهِ.(صحیح بخاری:٢٠١٤)

" जिसने ईमान के साथ और सवाब की नियत से रमज़ान की रातों में क़ियाम कियाउसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये गए। "

इजतेमाई इबादत की सूरत में किसी भी क़िसम के शोर हंगामे,गप शप और लड़ाई झगड़े से परहेज़ करना चाहिए और पूरी तवज्जो इबादत पर रखनी चाहिए।उबादा बिन सामित رضي الله عنهसे मरवी है

خَرَجَ النَّبِيِّ لِيُخبِرَنَا بِلَيلَةِ القَدرِ فَتَلَاحَى رَجُلَانِ مِنَ المُسلِمِينَ فَقَال: خَرَجتُ لِأُخبِرَكُم بِلَيلَةِ القَدرِ فَتَلَاحَى فُلَانٌ وَ فُلَانٌ فَرُفِعَت وَعَسَى اَن يَّكُونَ خَيرًا لَّكُم.(صحیح بخاری:٢٠٢٣)

"नबी अकरम صلى الله عليه وسلم हमे शबे क़द्र की ख़बर देने के लिए आरहे थे के दो मुसलमान आपस में झगड़ा करने लगे।उसपर आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया:मैं आया था के तुमहें शबे क़द्र बतादूं लेकिन फलां और फ़लां ने आपस में झगड़ा करलिया पस उस (के मुक़र्र वक़्त) का इल्म उठालिया गया।और उम्मीद है के तुम्हारे हक़ में यही बेहतर होगा।"

शबे क़द्र की अलामतें: रसलुल्लाह صلى الله عليه وسلم फ़रमाया:

تُصبِحُ الشَّمسُ صَبِيحَةَ تِلكَ اللَّيلَةَ مِثلَ الطَستِ لَيسَ لَهَا شُعَاعٌ حَتَّى تَرتَفِعَ.(سنن ابی داؤد:١٣٧٨)

"शबे क़द्र की सुबह को सूरज के बुलन्द होने तक उसकी शुआ नहीं होती।वो ऐसा होता है जैसे थाली। "

हज़रत अबु हुरैराह رضي الله عنهसे रिवायत है रसुल अल्लाह صلى الله عليه وسلم के पास शबे क़द्र का ज़िक्र किया तो आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया:

اَيُّكُم يَذكُرُ حِينَ طَلَعَ القَمَرُ وَهُوَ مِثلُ شِقِّ جَفنَةً.(صحیح مسلم:٢٧٧٩)

"तुम में से कोन उसे(यानी शबे क़द्र को)को याद रखता है(उस में)जब चाँद निकलता है तो ऐसा होता है जैसे बड़े थाल का किनारा।"

हज़रत ईबने अबबास رضي الله عنهसे मरवी है रसलुल्लाह صلى الله عليه وسلمने फ़रमाया:

لَيلَةُ القَدرِ طَلَقَةٌ لَا حَارَةٌ وَلَا بَارِدَةٌ تَصبِحُ الشَّمسُ يَومَهَا حَمرَاءَ ضَعِيفَةً.(صحیح ابن خزیمه:٢١٩٢)

"शबे क़द्र आसान और मौतदिल रात है जिस में ना गर्मी होती है और ना सर्दी।उस सुबह का सूरज इस तरह तुलु होता है के उस की सुर्ख़ी मदहम होती है।"

عَن زَرٍ قَالَ: سَمِعتُ اُبَیَّ بنِ کَعبٍ یَقُولُ : وَقِیلَ لَهُ: اِنَّ عَبدَاللهِ بنَ مَسعُودٍ یَقُولُ:
مَن قَامَ السَّنَةَ اَصَابَ لَیلَةَ القَدرِ فَقَالَ اُبَیٌّ : وَاللهِ الَّذِی لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ! اِنَّها لَفِی رَمَضَانَ
یَحلِفُ مَا یَستَثنِی وَ وَاللهِ ! اِنِّی لَاَعلَمُ اَیُّ لَیلَةٍ هِیَ , هِیَ اللَّیلَةُ الَّتِی اَمَرَنَا بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بِقِیَامِهَا, هِیَ لَیلَةُ صَبِیحَةِ سَبعٍ وَ عِشرِینَ , وَاَمَارَتُهَا اَن تَطلُعَ الشَّمسُ فِی صَبِیحَةِ یَومِهَا بَیضَاءَ لَا شُعَاعَ لَهَا۔(صحيح مسلم:۱۷۸۵۵

" हज़रत ज़र رضي الله عنهसे रिवायत है उन्होंने कहा मैं ने हज़रत उबई बिन काब رضي الله عنهको ये फ़रमाते सुना।उन से कहा गया हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद رضي الله عن फ़रमाते हैं के जो आदमी सारा साल क़ियाम करे वो लैलतुल क़द्र को पहुंच गया।हज़रत उबई رضي الله عنه फ़रमाने लगे अल्लाह की क़सम जिस के सिवा कोई माबूद नहीं वो शबे क़द्र रमज़ान में है वो यक़ीन के साथ क़सम खाते हैं ।अल्लाह की क़सम बेशक मैं जानता हूं वो कौनसी रात है ये वही रात है जिस में अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमें क़ियाम का हुकम दिया,उस रात की सुबह २७ तारीख़ थी और उसकी अलामत ये थी के सूरज तुलु हुआ तो उसकी सफ़ेदी में शुआ ना थी।"

करने के काम

*लैलतुल क़द्र पाने की तमन्ना रखें और कोशिश करें।
*इस रात इबादत ख़ुसूसन क़ियाम करने का ऐहतमाम करें।
*नवाफ़िल,तिलावते क़ुरआन, नमाज़े तसबीह,दुआओं, अज़कार के लिए बाक़ायदा एक प्रोगराम तरतीब दें।
*बच्चों और घर वालों को भी अपने साथ शरीक करें
हैज़ वाली ख़्वातीन ज़िक्र व तसबीह करें और तिलावत क़ुरआन मजीद सुनें।
*लैलतुल क़द्र में इस दुआ को कसरत से पढ़ें ।उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा رضي الله عنه *कहती हैं मेंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺअगर मैं शबे क़द्र पालूं तो उसमें क्या कहूं? आप ﷺ ने फ़रमाया ,कहो:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيمٌ تَحِبُّ العَفوَ فَاعفُ عَنِّی۔

(سنن ترمذی:۳۵۱۳)

ऐ अल्लाह !तू माफ़ करने वाला है,करम फ़रमाने वाला है,माफ़ करने को पसंद करता है पस मुझे माफ़ फ़रमादे।

أَحْكامُ الصِّيَام

रोजे के ऐहकाम

लुग़त में सियाम "मुतलक़ रुक जाने" को केहते हैं।शरियत में उसका मफ़हूम है के "इबादत के इरादे से खाने पीने,मजामत और दूसरे रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों से सुबाह सादिक़ के तुलु से सूरज के गरूब तक रुक जाना।"
हर बालिग़,आक़िल,मुक़ीम और रोज़ा की ताक़त रखने वाले मुसलमान पर रोज़ा फ़र्ज़ है।(بحواله البقرة:١٨٣)

*फ़र्ज़ रोज़े की नियत फ़ज्र से पेहले करना ज़रूरी है। (بحواله سنن ابی داؤد:٢٤٥٤)

*नियत के लिए दिल का इरादा काफ़ी है।ज़बान से कोई अलफ़ाज़ सुन्नत से साबित नही है।

*रोज़ा की हालत में मिसवाक करना सुन्नत से साबित है।(صحيح البخاری،باب:٢٧)

*आंख में सुर्मा लगाने से रोज़ा नहीं टूटता ।(صحيح البخاری،باب:٢٨)

*नाक में दवा डालने से दवा हलक़ या मेदे में पहुँच जाए तो रोज़ा टूट जाता है । (صحيح البخاری،باب:٢٧)

*गर्मी की शिद्दत से रोज़दार गुसल या कुल्ली कर सकता है।

*रोज़े की हालत में वज़ू करते वक़्त नाक में इसतरह पानी डालना के हलक़ तक पहुँचने का अंदेशा हो जाइज़ नहीं (سنن ترمذی:٧٨٨)

*नकसीर,इस्तेहाज़ा और इस जैसा दूसरा ख़ून निकलने से रोज़ा नहीं टूटता,सिर्फ़ हैज़ या नफ़ास के ख़ून से

*रोज़ा टूटेगा ख़्वाह दिन के किसी हिस्से में हो।

*रोज़े की हालत में पछने तगवाए जासकते हैं।।(صحيح بخاری:١٩٣٨)

*जान बूझ कर क़ैय करने से रोज़ा टूट जाता है,लेकिन किसी को ख़ुद ब ख़ुद क़ैय आजाए तो उस से रोज़ा नहीं टूटता। (سنن ای داؤد:٢٣٨٠)

*ब वक़्ते ज़रूरत खाने का ज़ायक़ा चखने से कोई हर्ज नहीं,तरीक़ा ये है के ज़बान के किनारे पर रख कर चखें,हलक़ तक ना जाने दें। (صحيح بخاری،باب:٢٥)

*भूल कर खापी लें तो रोज़ा सही होगा,लेकिन याद आते ही फ़ौरन हाथ रोक लेना वाजिब है हत्ता के मुँह का निवाला या घूंट भी उगल देना ज़रूरी है।
(صحيح بخاری:١٩٣٣)

*जिसने जान बूझ कर खापी लिया उसपर तौबा और रोज़े की क़ज़ा वाजिब है।

*रोज़े की हालत में थूक निगलने में कोई हर्ज नहीं।(صحیح بخاری،باب:٢٧)
*दाँत से खून निकलने से रोज़े पर कोई असर नहीं पड़ता।

*रोज़ेदार के लिए ख़ुशबू लगाना और सूंघना जाइज़ है।

*जो बुढ़ापे या ऐसी कोई बीमारी की वजह से जिस से सेहत की उम्मीद नहीं,रोज़ा ना रख सके तो वो हर

*दिन के बदले एक मिसकीन को खाना खिलाएगा।

*जो बीमार था फिर सहेत हो गई ,क़जा की ताक़त रखते हुए भी क़ज़ा ना की और मौत आगई तो उस के

*क़ज़ा रोज़े उसके वारिस को रखने चाहिए।(صحیح بخاری:١٩٥٢)
*हामला और दूध पिलाने वाली औरत के लिए रोज़ा रखना मुशक़्क़त का बाइस हो तो रोज़ा ना रखे
*लेकिन इन रोज़ों की क़ज़ा वाजिब होगी(سنن ابن ماجه:١٦٦٧)

*मुसाफिर के लिए रोज़ा ना रखना अफ़ज़ल है लेकिन बहालते सफ़र रोज़ा रखले तो कोई हर्ज नहीं क्यों के नबी अकरम ﷺ से रोज़ा रखना और ना रखना दोनों साबित हैं।अलबत्ता गर्मी की शिद्दत और मुशक़्क़त हो तो मुसाफिर के लिए रोज़ा ना रखना चाहिए।
(صحیح بخاری:١٩٤٦،١٩٤٥،١٩٤٣) ।

*रमज़ान में रोज़ा की हालत में शोहर अपनी बीवी से ज़बरदस्ती जमा करले तो बीवी का रोज़ा सही होगा

और उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं,अलबत्ता शोहर गुनाहगार होगा, नीज़ शोहर पर उस दिन के रोज़े की

क़ज़ा और कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा ।।(صحیح بخاری:١٩٣٦)

*कफ़्फारे के लिए वो एक गुलाम आज़ाद करे,अगर उसकी ताक़त ना हो तो लगातार दो महीने रोज़े

रखे,अगर इसकी भी ताक़त ना हो तो साठ मिसकीनों को खाना खिलाए।

*ज़हन में शहवत का तसव्वुर आया (अलबत्ता तसव्वुर लाने से रोका गया है) और मनी ख़ारिज होगई

या सोते में ऐहतेलाम होगया तो उस से रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा।मज़ी निकलने से रोज़ा नहीं टूटता (ग़ल्बा

शहवत की वजह से निकलने वाले लेसदार मादे को मज़ी केहते हैं) ।(صحیح بخاری،باب:٣٢)

*फ़र्ज़ रोज़ों की क़ज़ा अगले रमज़ान से पेहले किसी भी वक़्त अदा की जासकती है।।(صحیح بخاری:١٩٥٠)

الوداع رمضان

अलविदा रमज़ान

गिन्ती के चन्द दिन **ايام معدودات** आखिर कार अलविदाइ घड़ियां आ पहुंचीं इख़्तेताम को पहुंचे इन दिनों में जो भी नेकी का काम हुआ अल्लाह की तौफ़ीक़ से हुआ इस लिए अगर इस माह में हम कोई भी नेकी कर सके तो इस पर गुरूर दिल में ना आने पाए क्योंके अल्लाह के नेक बन्दों के बारे में आता है-

وَالَّذِينَ يُؤتُونَ مَآ اٰتَوا وَّقُلُوبُهُم وَجِلَةٌ اَنَّهُم اِلٰى رَبِّهِم رٰجِعُونَ۔(المؤمنون:٦٠)

"और जिन का हाल ये है के वो (अल्लाह की राह में) देते हैं जो कुछ भी दे सकते हैं और (फिर भी) दिल उनके इस ख़्याल से कांपते रहते हैं के हमें अपने रब की तरफ़ पलटना है।"

मेहनत और कोशिश के बावजूद इस ऐहसास के साथ के "हक़ तो ये है की हक़ अदा ना हुआ ।" ऐसे में दिल से एक आवाज़ आती है के :

ऐ रब तू हमारे आमाल को ना देख अपनी वसी रहमत को देख------

तू हमें अपना क़ुर्ब हमारी इबादत की वजह से नहीं बल्के अपने करम की बदौलत अता कर---------

तू अपनी इबादत को हमारी आँखो की ठंडक बनादे-----

हमें इख़्लास की दौलत से नवाज़--------

और बग़ैर हिसाब के बख़्श दे क्योंके तूही واسع المغفرة है

इस रमज़ान में जो कुछ हो सका वो सिर्फ़ तेरी ख़ास इनायत की वजह से था----- और जो ना होसका वो सरा सर हमारी अपनी गफ़लत अपनी कोताही की वजह से था।

سپر دم بتو مایہء خویش را
तو دانی حسابی کم و بیش را

में अपना हक़ीर सरमाया
तेरे सुपुर्द करता हुं-

हिसाब की कमी बेशी को
तू ख़ूब जानता है

या रब हमें आइन्दा तमाम ज़िन्दगी के लिए सिरातल मुस्तक़ीम पर जमाए रखना और कभी नेकी के मोक़ों से मेहरूम ना करना। आमीन-------

عِيدُ الفِطرِ

ईदुल फ़ितर

*ईदुल फ़ितर ख़ुशी और मुसर्रत का दिन है।इस दिन रोज़ा रखना मना हैये दिन खाने पीने और अल्लाह की बड़ाई बयान करने का दिन है।

*ख़ुशी के इज़हार के लिए चाँद रात से ही मसाजिद ,बाज़ारों,रास्तों और घरों में तकबीरात बुलन्द करनी चाहिऐं।

***सदक़ा फ़ितर** हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ख़्वाह उसने रमज़ान के रोज़े रखे हों या नहीं नमाज़े ईद से पेहले पैदा होने वाले बच्चे,घर के नौकर और घर आए हुए मेहमान का भी सदक़ा फ़ितर देना होगा।उसके लिए साहेबे निसाब होना शर्त नहीं।

عَن اِبنِ عَبَاسٍ قَالَ: فَرَضَ رَسُولُ اللهِ صلی اللہ علیہ وسلم زَكَوة الفِطرِ طُهرَةً لِلصَّائِمِ مِنَ اللَّغوِ وَ الرَّفثِ وَ طُعمَةً لِلمَسَاكِينِ مَن اَدَّاهَا قَبلَ الصَّلوةِ

فَهِیَ زَكَاةٌ مَقبُولَةٌ وَمَن اَدَّاهَا بَعدَ الصَّلوةِ فَهِیَ صَدَقَةٌ مِنَ الصَّدَقَاتِ -(سنن ابی داؤد:١٦٠٩)

अबदुल्लाह बिन अबबासرضي الله عنه से रिवायत है के रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने सदक़ा फितर को फ़र्ज़ क़रार दिया है ताके रोज़ादार के लिए लग़्व और बेहुदा अक़वाल व अफ़आल से पाकीज़गी हो जाए,और मिसकीनों को खाने को मिल जाए,चुनांचे जिसने उसे नमाज़(ईद)से पेहले पेहले अदा किया तो ये ऐसी ज़कात है जो क़ुबूल करली गई और जिसने उसे नमाज़ के बाद अदा किया तो ये आम सदक़ात में से एक सदक़ा होगा।

*ईद के रोज़ मिसवाक करना,ग़ुसल करना,बेहतरीन लिबास पेहनना और ख़ुशबू लगाना सुन्नत है।

*नमाज़े ईद के लिए जाने से पेहले मीठी चीज़(ख़ुसूसन खुजूरें) खाना सुन्नत है। (صحیح بخاری:953)

*ईदगाह जाते हुए कसरत से तकबीरात पढ़ना सुन्नत है।(مصنف ابن ابی شیبه ،ج:٣، 6645)

*ईद की दो रकतों से पेहले और बाद में कोई नफ़िल नमाज़ नहीं है।(صحیح بخاری:989)

*नमाज़े ईद की अदायगी के लिए औरतों को भी जाना चाहिए।उम्मे अतीया रضي الله عنه से रिवायत है फ़रमाती हैं

اَمَرنَا تَعنِی النَّبِیَّ صلی اللہ علیہ وسلم اَن نُّخرِجَ فِی العِيدَينِ العَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الخُدُورِ وَ اَمَرَ الحُيَّضَ اَن يَعتَزِلنَ مُصَلَّى المُسلِمِينَ۔

"हमें हुकम दिया यानी नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने के हम जवान,कंवारी लड़कीयों और पर्दा नशीन औरतों को भी दोनों ईदों के दिन (नमाज़ के लिए) लाऐं और हुकम दिया के हैज़ वालियां मुसलमानों की नमाज़ों कीजगह से दूर रहें।"

(صحیح مسلم:2054)

*नमाज़ ईद से वापसी पर रास्ता बदलना सुन्नत है।(صحيح بخارى:986)

*किसी वजह से नमाज़ ईद ना पासकने वाले लोग घर में दो रकत नमाज़ अदा कर सकते हैं।

(صحيح بخارى،اب:٢٥)

*ईद के रोज़ मुसलमानों की बाहम मुलाक़ात आपस की मोहब्बत बढ़ाने का सबब बनती है।सहाबा कराम رضي الله عنه उस मुलाक़ात में एक दूसरे को नीचे दी हुई दुआ दिया करते थे।

تَقَبَّلَ اللّٰهُ مِنَّا وَ مِنكُم۔

(سنن الكبرى البيهقى:٦٣٩٠)

"अल्लाह ताला हम से और आप से (इबादत)क़ुबूल फ़रमाए।"

تکبیرات

اَللّٰهُ اَكبَر، اَللّٰهُ اَكبَر لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَللّٰهُ اَكبَر اَللّٰهُ اَكبَر وَلِلّٰهِ الحَمدُ۔

(مصنف ابن ابى شيبه:٥٦٥٠)

اَللّٰهُ اَكبَر كَبِيرًا وَالحَمدُ لِلّٰهِ كَثِيرًا

وَسُبحَانَ اللّٰهِ بَكرَةً وَّاَصِيلًا۔

(صحيح مسلم:١٣٥٨)

صِيَامُ الشَّوَّال

शववाल के रोज़े

रमज़ान और ईद गुज़रने के बाद शववाल के महीने में ६ रोज़े रखने का ऐहतमाम करें।

हज़रत अबु अय्यूब अनसारी رضي الله عنه से रिवायत है के बेशक रसुल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

مَن صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ اَتبَعَهُ سِتًّا مِن شَوَّالٍ كَانَ كَصِيَامِ الدَّهرِ۔(صحیح مسلم:۲۷۵۸)

"जो शख़्स रमज़ान के रोज़े रख कर शववाल के महीने में छे रोज़े रखे उसे उमर भर के रोज़ों का सवाब मिलता है।"

एक और जगह फ़रमाया :

صِيَامُ رَمَضَانَ بِعَشْرَةِ اَشهُرٍوَصِيَامُ السِّتَّةِ اَيَّامٍ بِشَهرَينِ فَذَلِكَ صِيَامُ السَّنَةِ۔(صحیح ابن خزیمہ:۲۱۱۵)

"रमज़ान के रोज़े दस महीने और शववाल के छे रोज़े दो महीनों के बराबर हैं,इस तरह ये एक साल के रोज़े होंगे।"

ये रोज़े ईद के फ़ौरन बाद या वक़्फ़े के साथ मुसलसल या अलग अलग दोनो तरह रखे जा सकते हैं। क़जा रोज़े रमज़ान में किसी भी उज़र पर छोड़े गए रोज़ों की क़ज़ा जल्द अज़ जल्द अदा करें क्योंके रमज़ान के दिनों की गिनती पूरी करना ज़रूरी है लेकिन ये रोज़े शववाल के नफ़ली रोज़ों के अलावा रखे जाऐंगे।अल्लाह ताला का इर्शाद है:

وَمَن كَانَ مَرِيضًا اَو عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّن اَيَّامٍ اُخَرَ يُرِيدُ اللهُ بِكُمُ اليُسرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ العُسرَ وَلِتُكمِلُوا العِدَّةَ۔(البقرة:۱۸۵)

"और जो कोई मरीज़ हो या सफ़र पर हो तो वो दूसरे दिनों में रोज़ों की तादाद पूरी करे ।अल्लाह तुम्हारे साथ नरमी करना चाहता है सख़्ती करना नहीं चाहता,इस लिए ये तरीक़ा तुम्हें बताया जारहा है ताके तुम रोजों की तादाद पूरी कर सको।"

सोमवार और जुमेरात का रोज़ा

रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाया:

تُعرَضُ الاَعمَالُ يَومَ الاِثنَينِ وَالخَمِيسِ ، فَاُحِبُّ اَن يُعرَضَ عَمَلِى وَاَنَا صَائِمٌ۔(سنن الترمذی:۷٤۷)

सोमवार और जुमेरात को लोगों के आमाल अल्लाह के सामने पेश किये जाते हैं ।मैं चाहता हूं के जब मेरे आमाल अल्लाह के सामने पेश किये जांऐं तो में (उस वक़्त) रोज़े

अईयाम बीज़ के रोज़े

रसूल अल्लाह ﷺ हर माह के तीन रौशन अईयाम (यानी चाँद की तेराह,चौदाह और पंदराह तारीख़) में रोज़ा रखा करते थे।(अबुदाऊद : २४५०)

नोट / दुआ

नोट / दुआ

नोट / दुआ

شَهرُ رَمَضَان

रेहमत के दरवाज़े खुलते हैं

रमज़ान साल के तमाम महीनों में सब से ज़्यादा अफ़ज़ल है।

जिस में क़ुरआन मजीद रसूलुल्लाह ﷺ पर नाज़िल हुआ।

इस महीने में क़ुरआन मजीद लुहे महफ़ूज़ से बैतुलुल इज्जत में उतारा गया।

इसी मुक़द्दस माह में सहुफ़े इब्राहीम और तमाम आसमानी किताबें तौरात,ज़ुबूरऔर इन्जील नाज़िल हुईं।

रमज़ान के दिनों में रोज़ा रखना रखना और रातों का क़ियाम बख़्शिश का बाईस है।

इसी माह में वो मुबारक रात लैलतुल क़द्र है जो हज़ार महीनों से बेहतर है।

इस माह की हर रात अल्लाह ताला लोगों को जहन्नम से आज़ाद करता है।

रमज़ान के शुरु होते ही जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते है।

जहन्नम के दरवाज़े बंद करदिये जाते हैं।

शयातीन क़ैद करदिए जाते हैं।

इस माह तक़वा ,इख़लास,हिदायत,सब्र,इनेसानी, औरतज़किया नफ़स जैसे सबसे अच्छे गुण प्राप्त होते हैं।

रमज़ान अल्लाह से क़ुर्ब हासील करने का महीना है।

रमज़ान अपने अंदर अच्छी तबदीली लाने और बुरी आदात को अच्छी आदात से बदलने का महीना है।

रमज़ान रुहानी,जिस्मानी ,ज़ेहनी और क़लबी सेहत हासिल करने का महीना है।लिहाज़ा

रमज़ान की आमद पर खुश होजाऐं,अल्लाह का शुक्र अदा करें और उस की हर घड़ी को ग़नीमत जानें।

> रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया
>
> اِذَا كَانَ رَمَضَانُ فُتِحَت اَبوَابُ الرَّحمَةِ۔(صحيح مسلم:٢٤٩٦)
>
> "जब रमज़ान का महीना आता है तो रेहमत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।"

अल्लाह ताला ने रेहमत के दरवाज़े खोल दीए हैं अब है कोई जो उनमें दाख़िल हो!

ISBN 978 969 8665 21 0

04010067

پبلی کیشنز
AL HUDA PUBLICATIONS